Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

72

[EDUC]ATI[ON] DEPARTMENT PUNJAB.

GEOGRAPHY OF INDIA,

भारत भूगोल

150672

STOCK VERIFY 2019-20 GKV Library
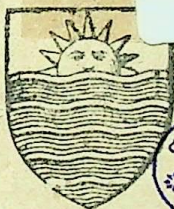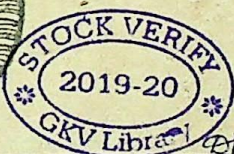
RAI SAHIB M. GULAB SINGH & SONS,
Mufid-i-Am Press
LAHORE.

2nd Edition. 1910 Price 0-2-2

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

84/73

150672

150672

विषय सूची

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत भूगोल।

सीमा—उत्तर में हिमालय पहाड़, पूर्व में ब्रह्मादेश, और बंगाले की खाड़ी, दक्षिण में हिन्द महासागर, पश्चिम में अर्ब सागर, बिलोचिस्थान, तथा अफ़ग़ानिस्थान ॥

लम्बाई चौड़ाई—लम्बाई—कश्मीर की उत्तरीयसीमा से कुमारी अन्तरीप तक २०२२ मील है ॥

चौड़ाई—ब्रह्मा की पूर्वसीमा से बिलोचिस्थान की पश्चिमसीमा तक २५२० मील के लगभग है ॥

क्षेत्रफल—भारत का समस्त क्षेत्रफल अठारह लाख वर्ग-मील है, इस हेतु से यह देश समस्त भूमण्डल का तीसवां भाग है ॥

स्वाभाविकविभाग—भारतवर्ष तृकोणाकार है प्रकृति ने भारत वर्ष को चार महा भागों में विभक्त किया है।

१म, हिमालय का पहाड़ी देश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२य, वह भूमिस्थल जिस में गंगा नदी, और उसकी सहायक नादियां, बहती हैं ।

३य. वह भूमि भाग जो सिन्धु, और उसकी ..ायक नदियों से, सिंचित होता है ॥

४ र्थ, दाक्षिण, इन में से प्रथम तीन भागों को मिलाकर इसे विशेष हिन्दुस्थान कहते हैं ॥

पर्वत ।

इस देश में बड़े २ पर्वत यह हैं:—

१म, हिमालय जो भूमण्डल के समस्त पर्वतों से ऊंचा है, इसकी लम्बाई पूर्व पश्चिमी १५००मील के लग भग है, और चौड़ाई २०० मील के लगभग है इस की बड़ी प्रसिद्ध चोटियां तीन हैं, पहिली माऊंट ऐवरस्ट जो २९००२ फुट ऊंची है, दूसरी कांचनजंगा और तीसरी धवल गिरी ॥

हिमालय शब्द का अर्थ संस्कृत भाषा में बर्फ़ का घर है, इस की चोटियां बर्फ़ से ढपी रहती हैं इसी कारण इस का यह नाम प्रसिद्ध होगया है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकशा हिन्दुस्तान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
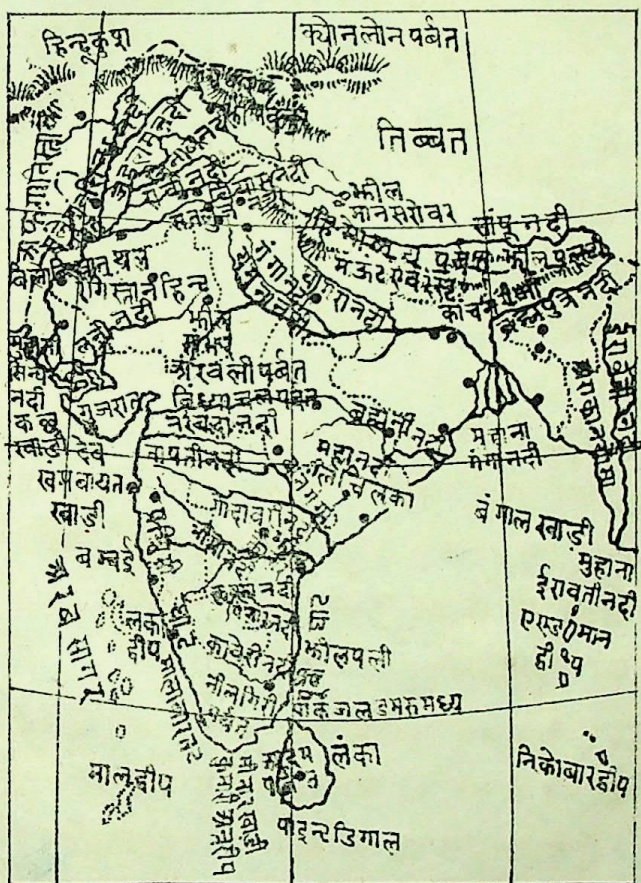
शिवालक पर्वत गंगा और व्यास के मध्य में विद्यमान हैं, इस पहाड़ में बहुत बड़े २ जल जन्तुओं की हड्डियें मिलती हैं ॥

हिन्दुकुश पर्वत चितराल के उत्तर में—सवात का पहाड़ी देश, पंचकोड़ा और पिशावर के प्रान्त में उतमानखेल और मलन्द जाति की पहाड़ियां इसी की शाखाएं हैं ॥

सियाह (कृष्ण) पर्वत–चलास और बुनेर के प्रान्तों में ॥

सुफेद (श्वेत) पर्वत–अफ़रीदियों की जातियों के देशों में ॥

सुलेमान पहाड़ अफ़गानिस्थान को भारत से पृथक् करता है, इस की सब से ऊंची चोटी तख़त सुलेमान ११३०० फुट ऊंची है, इस में कई दरे हैं जिन में सब से प्रसिद्ध ख़ैबर दरा है जो पिशावर के निकट है ॥

अरवली पर्वत राजपूताने में है, इसकी सब से ऊंची चोटी आबू पर्वत ५६५० फुट ऊंची है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विन्ध्याचल पर्वत भारत के बीचों बीच पटके के समान खाड़ी खंबायत से लेकर ज़िला भागलपुर में गंगा के किनारे तक चला गया है, यह पर्वत प्रकृति प्रकार से भारत को दो भागों में विभक्त करता है इस की ऊंचाई ५००० फुट से अधिक नहीं है ॥

सतपुड़ा—यह पर्वत नर्वदा और तापती के मध्य में विद्यमान हैं ॥

सहादरी—यह पर्वत विन्ध्याचल पर्वत के पश्चिमी सिरे से समुद्र के किनारे २ कुमारी अन्तरीप तक चला गया है, इस को पश्चिमी घाट भी कहते हैं, इस के सन्मुख भारत के पूर्वी तट पर पर्वत श्रेणी कावेरी नदी से उत्तर की ओर विन्ध्याचल की सीमा तक चली गई है, इस को पूर्वी घाट कहते हैं। दोनों घाटों के मध्य में नील गिरि पर्वत है, इसकी ऊंचाई का मध्य भाग साढ़े छः हजार फुट है ॥

——:*:——

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैदान ।

भारतवर्ष में बड़े मैदान यह हैं—गंगा का मैदान जो पृथ्वी के अतीव उपजाऊ और आबाद भागों में से है, इसका ढलान दक्षिण—पूर्व को है, सिन्ध नदी का रेतला मैदान इस का ढलान दक्षिण को है। पूर्वी तट का मैदान दक्षिण के पूर्वी तट के साथ २ चला गया है। इसी प्रकार पश्चिमी तट के साथ २ पश्चिमी तट का मैदान चला गया है ॥

नदियां ।

भूमण्डल के सर्व देशों की अपेक्षा भारत देश में नदियां बहुत हैं इसी कारण यहां हर भांति की वस्तु उपजती है ॥

भारत वर्ष की नदियां अपने निकास और बहाओ के कारण ५ भागों में विभक्त हैं ॥

प्रथम जो हिमालय से निकल कर दक्षिण पश्चिम की ओर बहती हुई अर्ब सागर में गिरती है। जैसे सिन्ध तथा उस की शाखा अर्थात् पंजाब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पांचों नदियां और उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रदेश की नदियां ॥

द्वितीय वह जो हिमालय पर्वत से निकलती हैं और पश्चिम से पूर्व और दक्षिण का रास्ता लेकर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती हैं, जैसे ब्रह्मपुत्र, गंगा, और अन्य नदियें, जो इन में आ मिली हैं, जैसे—१ यमुना २ गोमती ३ घाघरा ४ गंडक ५ कोसी ६ तिष्टा आदि ॥

तृतीय वह नदियां जो दक्षिण की ओर से उत्तर को बह कर अकेली या अन्य नदियों से मिल कर गंगा नदी में आ मिली हैं जैसे सोन, बेतवा, कालीसिन्ध चम्बल आदि ॥

चतुर्थ वह नदियां जो खंबायत की खाड़ी में आ मिलती हैं। इन में से महानदी और सांभरमती नदी तो उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम को, और नर्बदा, तथा तापती, पूव से पश्चिम को बहती है ॥

पंचम दक्षिण के वह सब बड़े २ नद जो पूर्व की ओर बहते हुए बंगाले की खाड़ी में जा गिरते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जैसे महानदी, गोदावरी, कृष्णा, पनार, पलार और कावेरी ॥

प्रथम प्रकार की नदियां।

सिन्धु नदी जिसे अटक भी कहते हैं, हिमालय के पार गारू नगर के निकट कैलाश पर्वत की उत्तरी सीमा से निकली है, इस की लम्बाई २००० मील है और निकास समुद्र के तल से १८०० फुट ऊंचा है सिन्ध देस में आकर इस की कई धारा हो गई हैं। सिन्ध देश का नाम इस नदी के नाम पर है, और हिन्दुस्तान शब्द का मूल भी इसी का नाम है। पंजाब की पांचों नदियां जिन का वर्णन भूगोल पंजाब में पढ़ आये हो, परस्पर मिल कर मिठनकोट के नीचे सिन्धु नदी में जा गिरती हैं। और उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश की नदियें भी इस प्रांत को सिंचित करती हुई इस नदी में आ मिलती हैं। इन में से 'काबुल' नदी अफ़ग़ानिस्तान के पर्वतों में से निकल कर 'सवात' और 'कोनेर' नदियों को साथ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेती हुई नगर अटक के निकट दाहिने तट से इस नदी में जा मिलती है ॥

कुर्रम नदी सुफ़ेद पर्वत के पूर्वीय ढलान से निकल कर लक्की से तीन मील के अन्तर पर टोची नदी को साथ लेती हुई और लूनी नदी अफ़ग़ानिस्तान के पर्वतों से निकल कर गोमल दर्रे के मार्ग से डेरा इस्माईल खां के प्रांत में बहती हुई सिन्धु नदी में मिल जाती है ॥

२य, प्रकार की नदियां ।

गंगा भारत वर्ष की बड़ी नदी है, इसे भागीरथी भी कहते हैं हिन्दू इस नदी को बड़ी पवित्र मानते हैं हज़ारों लाखों हिन्दू हर वर्ष गंगा स्नान के लिये हरिद्वार जाते हैं, यह हिमालय से निकल कर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है। इस की लंबाई १५६० मील है और निकास समुद्र के तल से १३८०० फ़ुट ऊंचा गंगोतरी पर्वत है। समुद्र से २०० मील परे गंगा की दो शाखा हो गई हैं बड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पद्मा और दूसरी भागीरथी अथवा हुगली कहते हैं। गंगा से व्यापार और खेती बाड़ी को बड़ा लाभ होता है। और इस के तट पर प्रसिद्ध२ नगर बसते हैं, जैसे हरिद्वार, कनखल, गढ़मुक्तेश्वर, कंनौज कानपुर, प्रयाग, काशी, पटना, भागलपुर और हुगली शाखा पर कलकत्ता आदि ॥

इस नदी से दो नहरें निकाली हैं एक हरिद्वार के पास से और द्वितीय अलीगढ़ के ज़िले से। पहिली तो कानपुर के निकट फिर गंगा में मिला दी है और द्वितीय हमीरपुर के प्रांत में यमुना में मिला दी है। इन नहरों ने व्यापार और खेती को बड़ा लाभ पहुंचाया है ॥

ब्रह्मपुत्र का निकास भी सतलुज नदी के निकास के समीप है गंगा तो पहाड़ से निकल कर दक्षिण पूर्व की ओर बह निकली है और हिमालय से बहुत दूर चली गई है, परन्तु ब्रह्मपुत्र हिमालय पर्वत के परे २ पूर्व की ओर बह कर दक्षिण पश्चिम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को फिरता है और अन्त में दो धारों में विभक्त होकर १८०० मील की यात्रा करके गंगा में आ मिला है, इस नद को तिब्बत में सांपू कहते हैं इस की जो धारा गंगा में आ मिलती है उसको कनाई नदी कहते हैं ॥

यमुना—गंगोत्तरी से कुछ दूर यमनोत्तरी से निकली है वहां से ८६० मील बह कर प्रयाग (इलाहाबाद) के नीचे गंगा में आ मिलती है, इसके तट पर कई बड़े २ नगर बसते हैं, जैसे कि देहली बृन्दावन, मथुरा, आगरा और प्रयाग। हिन्दू गंगा से दूसरे दर्जे पर इस को पवित्र जानते हैं ॥

पूर्व की ४ नदियां घाघरा, गण्डक, कोसी और तिष्टा हिमालय के बरफ़ानी पहाड़ों से आते हैं इन में गोमती काशी से ७ मील नीचे, घाघरा छपरा से कुछ ऊपर, गण्डक पटना के सन्मुख, कोसी भागलपुर से कुछ आगे बढ़कर गंगा में जा मिलती हैं, और तिष्टा ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३य, प्रकार की नादियां।

सोन, बेतवा, कालीसिंध और चम्बल, यह सब विन्ध्याचल से निकली हैं, इन में से सोन गंगा में और शेष यमुना में जा गिरती हैं॥

४र्थ प्रकार की नादियां।

नर्वदा सोन नदी के निकास के निकट अमर कण्टक से निकली है, और विन्ध्याचल पर्वत के पाद में ७३५ मील बह कर भड़ोच के समीप खंबायत की खाड़ी में जा गिरी है। तापती नदी बेतोल के समीप पर्वत से निकल कर सतपुड़े पर्वत के दक्षिण में बहती हुई ४०० मील की यात्रा कर खंबायत की खाड़ी में गिरती है॥

५वें प्रकार की नादियां।

महानदी नागपुर के प्रान्त से निकलती है, और कटक के समीप कई धारों में हो कर बंगाले की खाड़ी में गिरती है, इस की लम्बाई ५२० मील है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदावरी पश्चिमी घाट से निकलती है, पूर्व की ओर औरंगाबाद और बेदर के प्रान्तों से गुजर कर उत्तरी सरकारों में बहती हुई, ९०० मील का मार्ग चल कर समुद्र में जा मिलती है ॥

कृष्णा नदी महाबलेश्वर पर्वत से निकलकर तुंगभद्रा को साथ लेती हुई कोई ८०० मील की दूरी पर मच्छली बन्दर के समीप समुद्र में जा गिरती है, इस में रत्न बहुत मिलते हैं ॥

पनार नदी मैसूर के पर्वत से निकलकर बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है ॥

कावेरी नदी पश्चिमी घाट से निकलकर नील गिरी पर्वत के बीच से होती हुई समुद्र में जा गिरती है, इसकी लम्बाई ४७० मील है, दक्षिण के हिन्दू इस नदी को पवित्र जानते हैं ॥

अन्तरीप ।

भारतवर्ष में केवल एक ही प्रसिद्ध अन्तरीप है, जो कि इसका अति अन्तिम दक्षिणी सिरा है । इस का नाम कुमारी अन्तरीप है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झीलें ।

इस देश में प्रसिद्ध झीलें ये हैं । चिलका कटक के निकट है, इसका पानी खारी है इस में लवण वहुत उत्पन्न होता है । कोलेर कृष्णा, और गोदावरी, के मध्य में है, और इस का जल मीठा है । पुलीकाट करनाटक में सलवण जल की खाड़ी है। सांभर, भरतपुर, जयपुर, और जोधपुर, की सीमाओं के मध्य में, लवण वहुत उत्तम उत्पन्न होता है । वुल्लर कश्मीर में है इसकी थाह आज तक नहीं मिली यह मीठे जल की झील है । सागर, खाड़ी और जलडमरुमध्य अरव सागर भारत के पश्चिम में ॥

कच्छ और खंबायत की खाड़ियां पश्चिम में मिनार की खाड़ी लंका और भारत के मध्य में और बङ्गाले की खाड़ी पूर्व में ॥

पाक जल-डमरु-मध्य भारत को लंका से विभक्त करता है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वीप ।

भारत संबंधी छोटे २ कई द्वीपों के तीन झुण्ड हैं, इन में से एक का नाम लंका द्वीप है यह मालाबार के तट से डेढ़ सौ मील की दूरी पर है। द्वितीय माल द्वीप। तृतीय अण्डेमन और निकोबार के द्वीप जो बंगाल की खाड़ी में विद्यमान है। इन में से कई द्वीप ऐसे हैं जिन में बन, और घास, पात, के सिवा कुछ नहीं होता। अण्डेमन के निवासी कृष्ण वर्ण और पशु समान हैं। इन द्वीपों को कालापानी भी कहते हैं, यहां भारत वर्ष से सारी उमर के कैदी भेजे जाते हैं। पोर्टबलेयर इसका बड़ा नगर है। अण्डेमन, और निकोबार के द्वीप का प्रबन्ध चीफ़ कमिशनर के आधीन है । जो भारत की सरकार के आधीन है। रामेश्वरम का द्वीप लंका और भारत के मध्य एक छोटा सा द्वीप है, और हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। कहा जाता है कि इस सेतु को राजा रामचन्द्र जी ने बनवाया था और उस पर से उनकी सेना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंका के राजा रावण से युद्ध करने के लिये उतर कर गई थी ॥

जलवायु और भूमि ।

भारत वर्ष का दक्षिणी भाग तो बहुत उष्ण है, शेष भागों का जल वायु भी कई एक ऊंचे स्थानों के सिवा प्रायः गरम है । भारत में सरदी गरमी और वर्षा यह तीन बड़ी २ ऋतु होती हैं । गरम ऋतु, मार्च से जुलाई तक, वर्षा जुलाई से अक्तूबर तक, और सरदी अक्तूबर से मार्च तक रहती है । यहां की खेती बाड़ी प्रायः मौसमी वर्षाओं से होती है, नहरें और कुएं भी सहायता देते हैं, इस देश की भूमि प्रायः उपजाऊ है ॥

उपज ।

भारतवर्ष में सब प्रकार के अन्न मेवे तरकारी और गरम मसाले उत्पन्न होते हैं । जैसे चावल, गेहूं, जौ, चने, मोठ, बाजरा, मकई, सेब, अंगूर, नाशपाती, संतरा, खजूर, आम, आलू, गोभी,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घीया, कद्दू, तोरी, मूली, शलगम, खरबूज़े, तरबूज़, नील, अफ़ीम, दारचीनी, केसर, ज़ीरा, इलायची, और सब प्रकार के धातु लोहा, सोना, चांदी, तांवा, हीरा, लवण, शोरा, कोइला, मिट्टी का तेल, अवरक आदि, और बनों की उपज जैसे बांस, शीशम, सागौन, चंदन, साल, दियार, चीड़, आदि वृक्ष भी होते हैं ॥

पशु ।

भेड़, बकरी, गौ, भैंस, कुत्ता, घोड़ा, गधा, ऊंट, आदि पालतू पशु हाथी, शेर, चीता, रीछ, नाना प्रकार के बन्दर, गीदड़, हरिण, लोमड़ी, आदि जंगली जीव बहुत मिलते हैं । गैंडा पूर्वी ज़िलों में मिलता है, मैना, मोर, चकोर, सारस, जलकुक्ट तथा अन्य २ प्रकार के चमकीले परों वाले पक्षी भी देखने में आते हैं । सर्प भी कई प्रकार के होते हैं । बंगाल प्रान्त में रेशम के कीड़े भी बहुत होते हैं और नदियों में मगरमच्छ भी प्रायः होते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार ।

भारतवर्ष से अन्य देशों को व्यापार के लिये निम्नलिखित वस्तु जाती हैं, रुई, चावल, सरसों, तिल, और अफ़ीम। गेहूं, सन, चाय, चमड़ा, पोस्तीन, नील, कहवा, ऊन, रेशम, और शोरा आदि। अन्य देशों से यहां व्यापार के लिये यह वस्तु आती हैं। रुई का कपड़ा, धातुओं के पात्र, स्वर्ण, चांदी, लोहे के शस्त्र और कलें, मिट्टी का तेल, रेशमी वस्त्र, नाना भान्ति की मदिरा और खाण्ड इन के सिवा और बहुत सी वस्तु अंग्रेज़ों और फ़ौज के गोरों के वर्तने के लिये यूरुप से आती हैं। भारतवर्ष का समस्त वार्षिक व्यापार बाहर से ढाई अरब के लग भग है। इस देश का बाहिर का व्यापार नेपाल, अफ़गानिस्तान, इंगलिस्थान, जापान, जर्मनी, फ्रांस और अमरीका से है। परन्तु आधे से अधिक इंगलिस्थान से है॥

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबादी ।

भारतवर्ष की समस्त जन संख्या २९ करोड़ ४० लाख और बृटिश इण्डिया की आबादी २३ करोड़ ९९ लाख के लगभग है ॥

भारत निवासी, और भाषाएं आदि–भारतवर्ष में बहुत सी जातियें बसती हैं, प्रथम आर्यवंश के हिन्दू द्वितिय द्रावड़ वंश के हिन्दू तृतीय असली निवासी अर्थात् सन्याल, गोंड, भील, भिद्द, टोडे गक्खड़ आदि जो प्रायः पर्वतों और बनों में रहते हैं। चतुर्थ मुसलमान इन में कई तो उन हिन्दुओं की सन्तान हैं जिन्हों ने मुसलमानी धर्म्म स्वीकार कर लिया था, शेष मुग़ल पठान अर्ब, ईरानी हवशी आदि । पञ्चम पारसी षष्ठम यूरुप निवासी जैसे अंग्रेज़, फ्रांसीसी, पुर्तगाल निवासी आदि ॥

इन मनुष्यों की भाषाएं भी भिन्न २ हैं जिन में से बहुत सी अभी तक लिखने में नहीं आईं, परन्तु जिन भाषाओं में लिखना पढ़ना होता है उन में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति प्रसिद्ध यह हैं । बङ्गाली, हिन्दी, उर्दू, पञ्जाबी, पशतो, सिन्धी, मरहटी, किनारी, गुजराती, तामिल और तिलगू आदि । अङ्गरेज़ी भाषा का बहुत प्रचार है । नित्य प्रति इसका रिवाज बढ़ता जाता है ॥

धर्म्म—जिस प्रकार भूमण्डल की हर एक जाति का मनुष्य भारत में पाया जाता है उसी प्रकार भूमण्डल में शायद ही कोई ऐसा धर्म्म होगा जिस का अनुयायी इस मुल्क में न मिलता हो, परन्तु मुख्य धर्म्म यह हैं । प्रथम हिन्दू जो २२०००००० हैं इन में बौद्ध, जैनी, सिक्ख, आर्य्य, ब्राह्मणों तथा हिन्दुओं के अन्य नाना प्रकार के संप्रदाय अन्तर्गत हैं । २य मुसलमान ६२४००००० ३य, ईसाई २९२३०००, ४र्थ, पारसी ९४००० ॥

भारत के निवासी अधिकतर खेती वाड़ी का काम करते हैं । परन्तु अब प्रति दिन व्यापार की लग्न अधिक होती जाती है बहुत पुरुष नौकरी के अभि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाषी हैं, सींचने के काम में अतीव निपुण हैं, परन्तु हड्डी आदि तथा अन्य नाना प्रकार की खादों को जो विलायत में लाभकारी सिद्ध हुई हैं उनको वर्ताव में नहीं लाते। प्राचीन शिल्प विद्या विलायत की शिल्पकारी के सन्मुख मन्द पड़ गई है, परन्तु अब लोग कलों से काम लेने लग गए हैं, और बहुत से कपड़े आदि के कारखाने भी जारी होते जाते हैं ॥

भारत निवासी प्रायः सुबोध और परिश्रमी होते हैं, परन्तु कुल मर्य्यादा में अतीव बद्ध होते हैं। यह लोग सभ्य, सौभ्य, और शान्ति प्रिय होते हैं। अपने बन्धुओं और पड़ोसियों से अतीव हित रखते हैं। स्त्रियें प्रायः अनपढ़ रहती हैं। परन्तु अब उन की शिक्षा की ओर ध्यान होता जाता है और अब जगह जगह कन्या पाठशाला खुलती जाती हैं। यह देश किसी समय गणित विद्या, दर्शन विद्या और चिकित्सा, आदि में यूनान अर्ब का अध्यापक था। परन्तु अब कई शताब्दियों से जाति बंधन और अन्य कारणों ने इसे मुरदा सा बना दिया है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

150672

राज्य ।

समस्त भारत अङ्गरेज़ों की सरकार के आधीन है । यहां उसकी ओर से एक उपराज्य शासन करता है, इसकी राजधानी कलकत्ता है और प्रायः जितने भारती राजा और नवाब राज्य करते हैं यह अङ्गरेज़ी सरकार के आधीन और कर देने वाले हैं । नेपाल और भूटान के राज्य किसी के आधीन नहीं परन्तु उनका बरताव अङ्गरेज़ी सरकार से बहुत मित्रता का है और भारत के कुछ छोटे २ शहर अन्यदेश निवासी अर्थात् फ़रांसीसों और पुरतगेज़ों के आधीन हैं ॥

भारत का राजकीय विभाग ।

स्वाधीन रियासतों और अन्यदेश निवासियों के आधीन स्थानों को छोड़कर भारतवर्ष दो बड़े २ भागों में विभक्त हैं । प्रथम वह भाग जो अङ्गरेज़ी सरकार के आधीन है इस में राज्य-प्रबन्ध भी अंगरेज़ी ढंग पर है, द्वितीय वह भाग जिस पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश।

९ नवम्बर १९०१ ई० से यह नवीन प्रदेश नियत हुआ है। पञ्जाब के यह प्रान्त इस में संमिलित किये गये हैं। हजारा, पिशावर और कोहाट के समस्त ज़िले डेरा इस्माईलखां की दो तहसीलें। डेरा इस्माईलखां और टांक की तो पूरी २ तहसील और कुलाची के ३२ ग्राम पञ्जाब में और शेष इस प्रदेश में संमिलित हुए हैं। बन्नू की दो तहसीलें, बन्नू और लक्की मरवत॥

इनके अतिरिक्त दीर, खाता, चितराल, पंजकोड़ा, बुनेर, कुर्रम, खैबर, टोची, गरनाल और शीरानी आदि के सीमान्त परगने भी संमिलित हुए हैं॥

सीमा—इस प्रदेश के उत्तर में हिन्दूकुश पर्वत और गिलगित, पूर्व में रियास्त कश्मीर, और पञ्जाब दक्षिण में डेरागाज़ीखां का ज़िला, और बिलोचिस्तान, और पश्चिम में अफ़गानिस्तान है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाभाविकविभाग—क्षेत्र फल और अबादी—इस प्रदेश के प्रकृति ने तीन भाग किये हैं-१म, सिन्ध नदी के इस पार हजारे का ज़िला। २य, वह तंग प्रान्त जो सिन्ध नदी और पर्वती के मध्य में है। और जिस में पेशावर, कोहाट, और डेराइस्माईलखां, के ज़िले संमिलित हैं। ३य, वह पहाड़ी देश जो इन ज़िलों, और अफ़गानिस्तान के मध्य में है॥

इस प्रान्त का कुल क्षेत्र फल साढे सोलह हज़ार वर्ग मील के लगभग है और आबादी सन् १९०१ ई० की पुरुष संख्या के अनुसार २१ लाख २५ हज़ार ४८० है॥

भूमि और उपज—बहुत प्रान्तों की भूमि प्रायः पहाड़ी है प्रसिद्ध पर्वत सुलेमान पर्वत, और सफ़ेद पर्वत हैं, जो इस प्रान्त को अफ़ग़ानिस्तान से पृथक् करते हैं प्रसिद्ध नदियां यह हैं कुनार, सुवात, पंजकोड़ा, बाड़ा, कुर्रम और टोची।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनमें लाभ का निर्भर अधिकतर वर्षा पर है। यहां चील, और देवदारु आदि के बृक्ष बहुत होते हैं। परन्तु सम प्रान्तों में सींचने से कृषि होती है। और कई प्रकार के अन्न विशेष करके गेहूं और चने की उपज बहुत होती है॥

जल वायु—यहां का जल वायु विभिन्न प्रकार का है, कई प्रान्तों में ग्रीष्म ऋतु में अत्यन्त गरमी पड़ती है और शीतकाल में अत्यंत शीतता और कई पर्वतीय प्रान्त गर्मियों में भी शीतल रहते हैं कई स्थानों पर ऐसी हिम पड़ती है कि सरदी से हस्त पाद अकड़ जाते हैं॥

जाति और वाणी—इस प्रान्त में अधिकतर पठान निवास करते हैं। इनके अतिरिक्त, जाट, आवान और गूजर वंश के मुसलमान भी बसते हैं, हिन्दू और सिक्ख भी इस प्रान्त में कहीं २ पाए जाते हैं, पहाड़ी प्रान्तों में पशतो भाषा प्रचलित है, और समभूमि में पञ्जाबी और निकृष्ट उर्दू॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य और देश विभाग—इस प्रदेश के प्रधान अधिकारी महोदय चीफ़ कमिश्नर बहादुर हैं जो सीधे श्रीमान् वाइसराय और भारतवर्ष के गवर्नर जनरल के आधीन हैं। इन के आधीन पांच डिप्टी कमिश्नर और पांच पोलिटिकल एजण्ट हैं। देशीय शासन क कारण इस प्रदश की दो किस्मतें और पांच ज़िले हैं। किस्मत पेशावर में पेशावर, कोहाट और हजारा के ज़िले संमिलित हैं और डेराजात किस्मत में बन्नू और डेराइस्माईलखां॥

प्रसिद्ध नगर—इस प्रदेश के प्रसिद्ध नगर यह हैं—पेशावर राजधानी है और बड़ी भारी छावनी है। इस की आबादी एक लाख के लग भग है और इस में बालाहिसार का दुर्ग प्रसिद्ध है भारत वर्ष का जो व्यापार बुखारा और काबुल के संग होता है वह सब पेशावर की राह से होता है। ज़िला कोहाट में बड़ा नगर कोहाट है। ज़िला बन्नू में बन्नू जिस के पास

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुर्रम का दरा है। डेराइस्माईलखां के (नैऋत कोण) दक्षिण पश्चिमीय कोण में गोमल का दरा है जिस में से होकर ग़ज़नी को रासता जाता है। ज़िला हजारा में प्रसिद्ध नगर एबटाबाद है जो एक रमणीय स्थान है। महोदय चीफ़ कमिश्नर साहिब ग्रीष्म ऋतु में वायु परिवर्तन के लिये वहां जाते हैं॥

संयुक्त प्रदेश आगरा और अवध इस प्रदेश को पहिले पश्चिमोत्तर अवध प्रदेश कहते थे। परन्तु जब १९०१ ई० में उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश पृथक् बन गया तो इस प्रदेश का नाम बदल कर संयुक्त प्रदेश आगरा और अवध नियत किया गया॥

सीमा—उत्तर में नेपाल और हिमालय पर्वत पूर्व में विहार दक्षिण में मध्य भारत की एजण्टी और मध्य प्रदेश का कुछ भाग पश्चिम में राजपूताना और पञ्जाब॥

लम्बाई चौड़ाई—संयुक्त प्रदेश की लम्बाई अधिक से अधिक ७०० मील और चौड़ाई अधिक से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक २०० मील है क्षेत्र फल एक लाख वर्ग मील से कुछ अधिक है ॥

नदियां—इस प्रदेश मे बड़ी २ नदियां यह हैं—गंगा यमुना, राम गंगा, घाघरा, गोमती, बेतवा, चंबल, काली, सिंध, और कीन ॥

उपज—पहाड़ और देश के मध्य में जितनी भूमि है, उसे तराई कहते हैं, इस में हस्ती सिंह आदि हिंसक पशु बहुत हैं। संयुक्त प्रदेश की भूमि समतल और लाभकारी है। यहां यह वस्तु उत्पन्न होती हैं। गेहूं, यव, चना, उड़द, मोठ, मूंग, चावल, जवार, बाजरा, मकई, अरहर, तिल, मसूर, सरसों, अलसी, कुसुम, लालमिर्च, ईख, कपास, हल्दी, धनियां, पोस्त, नील, तम्बाकू आदि इस प्रान्त में कोइले और लोहे की कानें भी हैं। शोरा अधिक तय्यार होता है॥ पालतू पशु घोड़ा, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, ऊण्ट आदिक हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल वायु--जल वायु गर्म है परन्तु शीत उष्ण की अधिक्यता इतनी नहीं जितनी पञ्जाब में। वृष्टि अधिक नहीं होती॥

आबादी--इस प्रदेश की जन संख्या ४ करोड़ ७६ लाख ९१ हज़ार है। हिन्दी और उर्दू भाषाएं बोली जाती हैं मुसलमान समस्त आबादी का ६वां भाग है। शेष हिंदू हैं। यह प्रान्त अतीव घना आबाद है॥

राज्य--इस प्रान्त का शासन एक लेफ़टिनेण्ट गवर्नर साहिब के आधीन है और नियम नियत करने के लिये एक कौंसिल है॥

भाग--यह प्रदेश दो भागों में विभक्त है। आगरा, और अवध॥

आगरा।

इस भाग में यह क़िसमतें हैं। बनारस, इलाहाबाद, आगरा, मेरठ, रुहेलखण्ड, कमाऊं, गोरखपुर॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस भाग का पृथक् क्षेत्रफल ८३ हज़ार एक सौ ९८ वर्ग मील है और आबादी ३ करोड़ ४८ लाख ५८ हजार सात सौ है ॥

बनारस—इस क़िसमत में यह ज़िले हैं । बनारस, मिर्ज़ापुर, बलिया, गाज़ीपुर और जौनपुर ॥

बनारस—जिस को हिन्दू काशी कहते हैं । गंगा नदी के तट पर बसता है । इस प्रदेश का सब से बड़ा नगर है । और संस्कृत विद्या की बड़ी भूमि है । यहां हिन्दुओं के मन्दिर बहुत हैं । बनारस हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है । यहां के निवासी प्रायः धनी हैं । अन्य देशों से व्यापार सम्बन्धी वस्तु बहुत आती हैं । इसकी आबादी कोई दो लाख नौ हजार के लगभग है । यहां हिन्दुओं का एक कालिज है जो सैण्ट्रल हिन्दू कालिज के नाम से प्रसिद्ध है ॥

गाज़ीपुर—उस से इकतालीस मील की दूरी पर ईशान कोण में है । यहां का इतर और गुलाब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत प्रसिद्ध है । और अफ़ीम का बड़ा कारखाना है ॥

मिरज़ापुर—गंगा के दाहिने तट पर व्यापार की बड़ी मंडी है । लाख का बड़ा व्यापार होता है । यहां कालीन बहुत उत्तम बनते हैं ॥

जौनपुर में मुसलमानों के बनाए हुए पुराने मकानों के खण्ड अधिक हैं । और यह नगर इतर और फुलेल के कारण भी प्रसिद्ध है ॥

इलाहाबाद प्रयाग—इस किसमत में यह जिले हैं ।
इलाहाबाद, बांदा, फ़तहपुर, कानपुर, हमीरपुर, जालौन, झांसी ॥

इलाहाबाद (प्रयाग)—गंगा और यमुना के संगम पर बसता है । संयुक्तप्रदेश की राजधानी है । और हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है । यहां पत्थर का एक किला बड़ा पका बना हुआ है । इस में युद्ध की सम्पूर्ण सामग्री एकत्र की हुई है । इस नगर की आबादी १ लाख ७२ हजार है । हाईकोर्ट, मेओ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिज, मेओहस्पताल, टाउनहाल, देखने योग्य मकान हैं ॥

बांदा–यह नगर कभी व्यापार की मंडी था। परन्तु अब इस में शोभा बहुत कम है ॥

फ़तहपुर–पूर्वकाल में यह बड़ा नगर था इस में एक जामा मसजिद और अवध के नवाब के वज़ीर इनायत अलीखां की समाध बहुत सुन्दर और पक्का बना हुआ है ॥

कानपुर–गंगा के दाहिने तट पर बसता है। इस में रूई का बड़ा कारख़ाना है और सौदागरी की और वस्तुएं भी दूर २ तक जाती हैं। सेना की बड़ी भारी छावनी है। और यहां चमड़े और कपड़े के बड़े २ कारखाने हैं। और रेल का बड़ा संगम है ॥

हमीरपुर–यमुना और बेतवा नदियों के संगम के स्थान पर बसता है। यहां एक प्राचीन क़िला और मुसलमानों के कुछ मकबरों के सिवा कोई प्रसिद्ध स्थान नहीं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालोन—इस ज़िले का मुख्य स्थान अराई है। परन्तु सब से बड़ा नगर कालपी है। यहां मिश्री और काग़ज़ बहुत उत्तम बनते हैं॥

झांसी—रेल का बड़ा संगम स्थान है। यहां मजीठ बहुत उत्पन्न होती है! और खाखे का बड़ा व्यापार होता है॥

आगरा—इस क़िसमत में यह ज़िले हैं। आगरा मथुरा, इटावा, मैनपुरी, फर्रुख़ाबाद, एटा॥

आगरा या अकबराबाद यमुना नदी के दाहिने तट पर बसता है। इस में एक लाख ८८ हजार की आबादी है। अकबर बादशाह ने इस में लाल पत्थर का एक दृढ़ और पक्का दुर्ग बनवाया था! इसके भीतर संगमर्मर की मोती मसजिद अतीव मनोहर बनी हुई है। क़िले के निकट जामा मसजिद और उस से थोड़ी दूर रोज़ाताजमहल है। यह मकबरा सफ़ेद संगमर्मर का अतीव सुन्दर बना हुआ है। और पृथिवी पर अद्वितीय है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरे से १९ मील पश्चिम में फ़तहपुर सीकरी है, इस में अकबर बादशाह का प्रसाद और मकबरा और उसके मंत्री फ़ैज़ी, और बीरबल आदि के भवन अतीव दृढ़ और ऐश्वर्य्यमय बने हुए हैं। शैख-सलीम चिश्ती की दरगाह बहुत उत्तम मनोहर ऊंचा स्थान है॥

मथुरा—यह नगर आगरे से ३० कोस की दूरी पर यमुना के दहिने तट पर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, यहां श्री कृष्णचन्द्र जी ने जन्म लिया था। इसके निकट वृंदावन है, जहां कई ऐश्वर्य्यमय मन्दिर हैं॥

इटावा—आगरे से ३५ कोस की दूरी पर है इसके गिर्द बड़ी बीड़ है॥

मैनपुरी—छोटा सा नगर है॥

फर्रुखाबाद—प्राचीन काल में व्यापार की बड़ी मंडी था॥

एटा—इस में कास गंज और एटा दो छोटे २ ग्राम हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरठ-इस किसमत में यह ज़िले हैं। मेरठ, अलीगढ़, बुलन्दशहर, मुज़फ्फर नगर, सहारनपुर, डेरादून ॥

मेरठ-देहली से १८ कोस की दूरी पर काली नदी के बायें तट पर बसता है, इस में सरकारी सेना की बड़ी छावनी है। १८५७ ई० का विद्रोह इसी स्थान से आरम्भ हुआ था ॥

अलीगढ़-इसे कोयल भी कहते हैं। आगरे से २६ कोस के अन्तर पर है। यहां पर मुसलमानों का बड़ा भारी कालिज है ॥

बुलन्दशहर--पहिले यह एक छोटा उजड़ा सा कसबा था परन्तु अब यह फिर बसाया गया है। और ऐसी सुन्दर इमारतें बनवाई हैं कि अब यह नगर संयुक्त प्रदेश आगरा और अवध के दर्शनीय नगरों में से है ॥

मुज़फ्फ़रनगर-यह नगर मेरठ के उत्तर में है। इसकी शोभा और व्यापार प्रतिदिन बढ़ता जाता है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहारनपुर--यमुना की नहर के तट पर बसता है इस में एक सरकारी बाग़ अतीव रमणीय है। सहारनपुर में लकड़ी पर चित्रकारी का काम बहुत होता है। यहां के आम बहुत प्रसिद्ध हैं। इस ज़िले में हरिद्वार हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। यहां वैशाख में प्रतिवर्ष बड़ा मेला लगता है। यहां से अंगरेज़ों ने गंगा नदी में से बड़ी नहर निकाली है। सहारनपुर से ११ कोस की दूरी पर रुड़की एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां अंगरेज़ों ने एक पाठशाला टामसन-कालिज(Thomason College) के नाम से शिल्पविद्या की प्राप्ति के लिये बनाई हुई है। और इस के समीप गंगा की नहर पर दो ऐसे विचित्र पुल बनाये हुऐ हैं जिन के समान भारत में अन्य कोई नहीं॥

डेरादून की बहुत सी भूमि यमुना की नहर से सींची जाती है। इसके उत्तर में हिमालय श्रेणी में मनसूरी पर्वत और लंढोरगिरि है यहां की जलवायु परम आरोग्यदायक है। संयुक्त प्रदेश के प्रायः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेज़ गरमी के दिनों में आरोग्यता प्राप्ति और वायु परिवर्तन के लिये यहाँ आते हैं ॥

डेरादून के प्रान्त में चाय बहुत उत्पन्न होती है। और डेरादून में जांगली विद्या की पाठशाला है ॥

रुहेलखण्ड--इस किसमत में ६ ज़िले हैं बिजनौर, मुरादाबाद, बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर, पीलीभीत ॥

बिजनौर—इस जिले में चाकू, और आबनूस के कंघे बहुत अच्छे बनते हैं ॥

मुरादाबाद—यहां पीतल के वर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं और इन पर पारे की कलयी बहुत सुन्दर चढ़ती है ।

बदायूं-यह प्राचीन नगर है जो बरेली से १४ कोस की दूरी पर है ॥

बरेली-में दरियें और सूतीकालीन बुनेजाते हैं, और लकड़ी का काम भी अच्छा होता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाहजहांपुर—इस ज़िले में चीनी और मिश्री बहुत और उत्तम बनती है ॥

पीलीभीत–यह एक अच्छा नगर है, यहां के चावल अति प्रसिद्ध हैं अखरोट और हल्दी आदि कई पदार्थ यहां से व्यापार के लिये दिसावर को जाते हैं ॥

कमाऊं–इस किस्मत में यह जिले हैं–अल्मोड़ा, गढ़-
वाल, नैनीताल ॥

अल्मोड़ा–इस भूमि में गेहूं आदि अनाज बहुत उत्पन्न होते हैं। और चाय भी बहुत होती है अल्मोड़ा नगर इस जिले का मुख्यस्थान समुद्र तल से ५४९० फुट ऊंचा है इसी ज़िले में बद्रीनाथ और केदारनाथ के मन्दिर हैं ॥

गढ़वाल–इस में कहीं तो पर्वतों पर वृक्ष ही वृक्ष हैं और कहीं केवल पत्थर हैं, और पक्षी देखने मात्र को भी नहीं। पर्वतों की चोटियों पर हिम सदा जमी रहती है। पश्चिमी भाग में देवदारु लकड़ी के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृक्ष बहुत हैं। हाथी भी बहुत होते हैं परन्तु छोटे कद के हैं ॥

नैनीताल—अतीव रमणीक स्थान है यहां अंगरेज़ी अफ़सर गरमियों में जाया करते हैं। विशेष करके संयुक्त प्रदेश के लैफ़्टिनेण्ट गवरनर साहिब ग्रीष्म ऋतु में यहीं रहते हैं। यहां एक बड़ी मनोहर कासार है॥

गोरखपुर—इस किस्मत में यह ज़िले हैं—गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़ ॥

गोरखपुर—वह नगर गुरु गोरखनाथ के नाम से गोरखपुर कहलाता है यहां गुरु गोरखनाथ का मंदिर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। और नवाब शुजाउद्दौलह का इमाम बाड़ा दर्शनीय स्थान है। यहां अन्न और लकड़ी का बड़ा व्यापार होता है॥

बस्ती नगर गोरखपुर के उत्तर में है॥

अवध।

यह भाग गंगा नदी और नैपाल के बीच में है। पहिले यहां एक पृथक् चीफ़ कमिश्नर राज्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता था, परन्तु १८७७ ई० से संयुक्त प्रदेश के लैफिटिनण्ट गवर्नर साहिब बहादुर के आधीन हो गया है। क्षेत्र फल २३९६६ वर्गमील है। और आबादी एक करोड़ अठाईस लाख तेतीस हजार के लग भग है॥

जल वायु--जल वायु खुश्क है। शीत और उष्णता अत्यन्त होती है॥

उपज--यहां की भूमि फलदायक है। और यहां यह पदार्थ उत्पन्न होते हैं, गेहूं, चावल और कई प्रकार के अन्न, तेल निकालने के बीज, खांड, अफ़ीम, नील, और रूई॥

देशविभाग--यह देश दो किसमतों में विभक्त है। लखनऊ और फ़ैज़ाबाद॥

लखनऊ--इस किस्मत में छः ज़िले हैं। लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, रायबरेली, सीतापुर, खेड़ी॥

लखनऊ--यह नगर गोमती नदी के दाहिने तट पर बसता है। और कलकत्ते बम्बई, मदरास को छोड़ कर सारे भारत में बड़ा नगर है यहां के निवासी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी उर्दू भाषाएं बोली जाती हैं, यहां के निवासी सारे भारत वर्ष के निवासिओं की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान् हैं ॥

राज्य—इस सूबे के सब से बड़े हाकिम श्रीमान् लैफ़टिनैण्ट गवर्नर हैं जिन की राजधानी कलकत्ता है। प्रबंध की सहायता के लिये एक कौंसिल नियत है ॥

उपज—इस सूबे में चावल, गेहूं, चना, मूंग, आलू, रेशम, नारियल, सुपारी, नील, कोइला, चाय, सिनकोना आदि उत्पन्न होते हैं। अन्य देशों से रूई के कपड़े धातु, कलें, शराब, तेल और कांच के यंत्र इस सूबे में आते हैं ॥

विभाग—यह सूबा छः किस्मतों में विभक्त है। बर्दवान, प्रेसिडेंसि डिवीज़न, भागलपुर डिवीज़न, पटना, उड़ीसा, छोटा नागपुर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्दवान--यह क़िस्मत भागीरथी नदी के पूर्व में है। इस प्रान्त में चावल, आलू, रेशम, लाख, नील आदि वस्तुएं उत्पन्न होती हैं। इस में कोइले की दुकानें हैं। हुगली और दामोदर नदी इस ज़िले में बहती हैं त्रिवेणी और तारकनेश्वर दो हिन्दुओं के बड़े तीर्थ हैं। इस क़िस्मत में मुसलमान बहुत बसते हैं॥

बर्दवान के ज़िले--बर्दवान, हुगली, हाड़ा, मेदनीपुर, बांकुड़ा, बीरभूमि॥

प्रेसिडेन्सी डिवीज़न--इस क़िस्मत में व्यापार बहुत होता है। इसी कारण अनुमान किया गया है कि कलकत्ते में सारे भारत का तीसरा भाग व्यापार होता है इस प्रांत का उपज गेहूं, चना, लौंग, नारियल, सुपारी, रेशम, कांसी के बरतन, गुड़ आदि हैं। यहां काली घाट हिन्दुओं का तीर्थ है। नवद्वीप जो चेतनदेव की जन्म भूमि है और शांतिपुर वैष्णव लोगों का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थ है। नवद्वीप में संस्कृत की एक बहुत बड़ी पाठशाला है। शांतिपुर में कपड़े का कारखाना है ॥

प्रेसिडेंसी डिवीज़न के ज़िले--कलकत्ता, चौबीस परगना, नदिया, जैस्सूर, खुलना, मुरशिदाबाद ॥

भागलपुर डिवीज़न--इस किस्मत में चाय सिनकोना और सन बहुत उत्पन्न होती है जमालपुर जो नीगर में बसता है रेलवे का कारखाना है और इस प्रान्त में देव गोहर वैद्यनाथ का मंदिर है ॥

भागलपुर डिवीज़न के ज़िले--भागलपुर, मुंगेर, पुरनिया, दारजीलिंग, संथाल परगना, दारजीलिंग, समुद्रतल से ७ हज़ार फुट ऊंचा है ग्रीष्म ऋतु में बंगाल के लैफ़टिनण्ट गवर्नर साहिब यहां रहते हैं ॥

पटना—यहां पानी की बहुत अधिकता है। जल वायु, खुशक और अरोग्य है। गेहूं, जौं, चावल,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी, नील, सुपारी, गुलाब, आदि वस्तुएं उत्पन्न होती हैं। सारन के ज़िले में शोरा बहुत उत्तम बनता है इस प्रान्त में गंगा, सोन गंडक आदि नदियां बहती हैं जो इस प्रान्त को पानी से परिपूर्ण करती हैं ॥

इस प्रान्त में गया और बुध गया हिन्दुओं के तीर्थ हैं। शाशाराम स्थान में शेरशाह सूरी का मकबरा है। रुहतास गढ़ का दुर्ग भी इस प्रान्त में है। बालेश्वर में पत्थर और धातु के कारखाने हैं। रानापुर एक छावनी है ॥

पटना के ज़िले—गया, शाहाबाद, सारन, चम्पारन, मुज़फ्फ़रपुर, दरभंगा ॥

उड़ीसा—यह प्रान्त बंगाले की खाड़ी के पश्चिमोत्तरी तट पर है। इस भूमि का मध्य भाग फलदायक है। शेषभाग में पहाड़ियां और जंगल ही जंगल हैं इस प्रान्त में जंगली पशु बहुत हैं ॥

महानदी इस प्रान्त में बहती है। इस में नमक बहुत उत्पन्न होता है। कहीं २ लोहा और सोना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मिलता है। पुरी में जगन्नाथ का मंदिर है। जो हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है॥

उड़ीसा के ज़िले–बालासूर, कटक, पुरी, अंगल, सम्बलपुर॥

छोटा नागपुर–इस किस्मत में सात देशी रियासतें हैं। इस प्रांत के पश्चिमोत्तर की ओर पर्वत और जंगल बहुत हैं। इसमें कई नदी नाले बहते हैं इस में हज़ारी बाग़ बहुत आरोग्य स्थान है। इस प्रांत में लोहा, कोइला, शहतीर और चावल बहुत उत्पन्न होते हैं।

इस किस्मत में पारसनाथ का बहुत बड़ा पर्वत है जो जैन लोगों का बड़ा तीर्थ है॥

छोटे नागपुर के ज़िले—हज़ारी बाग़, रांची मानभूमि, सिंधभूमि, पालामू।

बंगाल के प्रसिद्ध नगर–कलकत्ता–यह शहर हुगली नदी पर बसता है। यह भारत की राजधानी है। और इसका सब से बड़ा नगर है, और इस में बड़े २ ऐश्वर्य वाले स्थान हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी आबादी सवा ग्याराह लाख के लगभग है। हिन्दू संख्या में अधिक हैं। यह बड़ा व्यापारी नगर है बंगाल प्रदेश का मुख्य स्थान भी यही है ॥

पटना—इसे पहले पाटली पुत्र कहते थे यह गंगा नदी पर बसता है। मगद वंश के राजाओं की राजधानी था। यहां अब अफ़ीम का बहुत व्यापार होता है।

मुरशिदाबाद—मुसलमान नवाबों की राजधानी था यहां से तीस मील पर पलासी का स्थान है। यहां १७५७ ई० में अंगरेजों ने नवाब सराजुल्दौलह को परास्त किया था ॥

बरवान—बड़ा विस्तीर्ण और रौनक वाला नगर है ॥

नदिया—यहां का नील विख्यात है पहले संस्कृत पठन पाठन के लिये प्रसिद्ध था।

भागलपुर—मिट्टी लोहे और काच की बहुत सुन्दर वस्तुएं बनती हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीगर-यह बड़ा नगर है, इस में लोहे और चमड़े की वस्तुएं बहुधा बनती हैं। इसके निकट सीताकुंड गर्म जल का स्रोत है॥

गया-हिन्दू और बुध धर्मानुयायी लोगों का बड़ा तीर्थ है॥

दारजीलिंग-एक बहुत मनोहर और रमणीक स्थान है। ग्रीष्म ऋतु में सरकारी दफ़तर यहां चले जाते हैं॥

पुरीजगन्नाथ---कलकत्ता के पश्चिम में समुद्र के तट पर बसता है। इस में जगन्नाथ का मंदिर है। यह हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है॥

पूर्वी बंगाल और आसाम—यह प्रदेश बहुत नया है। १६ अक्तूबर १९०५ ई० को यह प्रदेश पृथक् नियत किया गया था॥

सीमा-उत्तर में हिमालय पर्वत, पूर्व में ब्रह्मा, पश्चिम में बंगाल और बंगाले की खाड़ी, दक्षिण में बंगाले की खाड़ी और ब्रह्मा॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रफल और आबादी—इस प्रदेश की आकृति एक समबाहु त्रिभुज जैसी है। इसका क्षेत्रफल १०६५०० वर्गमील है। और आबादी तीन करोड़ दस लाख है। इस प्रदेश में मुसलमान संख्या में अधिक हैं। और हिन्दू और बुध लोग भी यहां खासी संख्या में हैं॥

जलवायु—यहां के तल के सम न होने के कारण कई २ स्थानों के जलवायु में बहुत फरक है। अत्यंत शीत और अत्यंत उष्णता कहीं नहीं। वृष्टि हो जाने से जलवायु मध्यम हो जाता है॥

उपज—चाय, और सन, इस प्रदेश में बहुत उत्पन्न होते हैं। आम, नील, संतरे, चावल, कोइला, तम्बाकू, शहतीर, और इण्डियारबर के वृक्ष भी यहां उत्पन्न होते हैं॥

राज्य—इस प्रदेश का प्रबन्ध एक लैफ़टिनैण्ट गवर्नर साहिब बहादुर के आधीन है जिनका मुख्य स्थान ढाका है। एक कौंसिल प्रबन्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धी कामों में सहायता देने के लिये नियत है ॥

देशी रियास्तें—इस प्रान्त में कूचबिहार, मनीपुर, टिपरा की पहाड़ा रियास्तें हैं । और इन के अतिरिक्त २५ छोटी २ खासिया और जैंतिया पहाड़ियों की रियासतें भी हैं ॥

विभाग—इस प्रदेश में पांच किस्मतें हैं । ढाका, चाटगाम, राजशाही, सुरमाघाटी, आसामघाटी ॥

ढाका—यह किस्मत बंगाल के पूर्व में है । इस में मुसलमानों की आबादी और जातियों की अपेक्षा अधिक है ॥

इस में चार ज़िले हैं ढाका, फ़रीदपुर, बाकरगंज, मैमनसिंह ॥

ढाका ज़िले में ढाका बड़ा नगर है । जो इस ज़िले का मुख्य स्थान है । मुसल्मानों के राज्य में बंगाल प्रदेश की यही राजधानी था । अब भी इस की प्रभुता के चिन्ह दिखाई देते हैं । ढाके की मलमल अद्वितीय होती है । कोमलता में कोई कपड़ा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके तुल्य नहीं होता। इस से १० कोस की दूरी पर नारायण गंज नमक की बड़ी मंडी है॥

ज़िला फ़रीदपुर-इस ज़िले में गंगा, और ब्रह्मपुत्र, दो नदियां बहती हैं। वर्षा काल में यहां की भूमि में चारों ओर से जल भर जाता है कृषि खूब होती है। इस प्रांत में चावल, सुपारी, कपास, भांग, चीनी, उत्तम उत्पन्न होती है। इस ज़िले के जंगलों में हाथी बहुधा पाये जाते हैं॥

ज़िला बाकर गंज-यह ज़िला समुद्र के तट पर बसता है। यहां लवण बहुत होता है इस ज़िले में धान की दो फ़सलें होती हैं। इस ज़िले का मुख्य स्थान बारीसाल है॥

ज़िला मैमनसिंह में सफ़ीराबाद बड़ा नगर है॥

किस्मत चाटगाम-यह किस्मत ढाके से आग्नेय कोण में है। इस में पर्वत बहुत हैं। यहां तंबाकू, पान, नील, नारियल, चावल, रूई, चाय, सन, और लोहा, उत्पन्न होता है। जंगली हाथी बहुधा स्थानों पर मिलते हैं। इस किस्मत में नारियल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बृक्ष बहुत हैं ॥

इस क़िस्मत में तीन ज़िले हैं । चाटगाम, टिपरा, नवाखेली ॥

चाटगाम एक बड़ा व्योपारी स्थान है और एक प्रसिद्ध बंदर है यहां नौका और जहाज बनते हैं ॥

जिला टिपरा में हाथी बहुत होते हैं । नवाखेली में नारियल के बृक्ष और कासार बहुत हैं ॥

किसमत राजशाही—इस किसमत में भूमि कृषी के बहुत योग्य है । कासार भी बहुत हैं। जंगलों में बहुत काले रीछ बन्दर, हाथी, और गैंडे बहुत पाए जाते हैं । चावल, बांस, गेहूं, नारियल और रांग मिट्टी उत्पन्न होती है ॥

इस किसमत में निम्नलिखित ज़िले शामिल हैं । राजशाही, दीनाजपुर रंगपुर, पबना, बोगरा, जल्पागोरी, मालदा ॥

किसमत सुरमा घाटी—लोगों की हालत प्रायः उत्तम है । चाय बहुधा उत्पन्न होती है । चाय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अतिरिक्त तम्बाकू, पान, सुपारी, चावल, ईख, लोहा भी उत्पन्न होता है ॥

इस क़िसमत में सिलहट, कछार, लोशाई, नागा-हल, खासिया, और जैन्तिया के पहाड़ी ज़िले हैं ॥

सिलहट में बंगाली बहुत रहते हैं। यहां नारङ्गी और चन्दन के बृक्ष बहुत हैं। पहाड़ों की तलहटी से चूने का पत्थर बहुधा निकलता है। पहाड़ों में छोटे कद के हाथी बहुधा पाए जाते हैं ॥

क़िसमत आसामघाटी--इस में चाय बहुधा उप-जती है इस प्रान्त में बहुतसी कानें हैं जिन में से बहुत अमोल धातुएं निकलती हैं। और कहीं २ नदियों की रेत धोने से कुछ सोना भी मिलता है ॥

इस क़िसमत में यह ज़िले हैं--कामरूप, डोरांग, लोगाम, सिबसागर, लखीमपुर, ग्वाल पाड़ा, गारू की पहाड़ियां ॥

इस क़िसमत में शीलांग नगर ख़ासिया की पहाड़ियों की चोटी पर बसता है। गौहाटा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चिरापूंजी दो और प्रसिद्ध नगर हैं । चिरापूंजी में ५०० इंच वर्षा होती है । इतनी वर्षा पृथिवी पर और कहीं नहीं होती । गौहाटी में चाय का बड़ा व्यापार होता है ॥

पूर्वीय बंगाल प्रदेश और आसाम के प्रसिद्ध नगर—इस प्रदेश में असल में प्रसिद्ध नगर बहुत ही कम हैं और यह इस प्रदेश की एक अनोखी खास बात है । ढाका, चाटगाम, सिलहट, गौहाटी, और शीलांग अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक प्रसिद्ध है । उनका वृतान्त पहिले आचुका है ॥

मध्य प्रदेश ।

सीमा—छोटे नागपुर से हैदराबाद तक जो देश है । उसे भारत का मध्य प्रदेश कहते हैं । इसके उत्तर में मध्य भारत की एजण्टी और थोड़ासा भाग संयुक्त प्रदेश का, पूर्व में छोटे नागपुर की कर देने वाली रियासतें, दक्षिण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मदरास और निज़ाम के देश हैं। पश्चिम में निज़ाम का देश बरार खांदेश और इन्दौर की रियासतें हैं ॥

लम्बाई चौड़ाई क्षेत्रफल और आबादी——यह प्रदेश उत्तर से दक्षिण तक ५०० मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम तक ६०० मील चौड़ा है। इस का क्षेत्रफल ८६४५९ वर्ग मील है। और आबादी अट्ठानवें लाख छिहत्तर हजार, जिस में से सत्तरह लाख के लगभग गौंड और शेष अन्य प्राचीन जातियें हैं। हिन्दी मरहटी और उड़िया भाषाएं बोली जाती हैं मुसल्मानों की संख्या बहुत कम है ॥

नदियां और पर्वत आदि——विंध्याचल आर सतपुड़े की शाखाएं समस्त देश में फैली हुई हैं, और नदी नाले बहुत हैं, नदियों और पर्वतों के कारण इस देश का जल वायु बहुत सम होगया है। चावल, गेहूं रूई और कोइला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत होते हैं यह प्रदेश एक चीफ़ कमिश्नर के आधीन है। इस में ४ किसमतें और अठारह ज़िले हैं ॥

(१) किसमत जबलपुर--इस में यह ज़िले हैं सागर, दमोह, जबलपुर, मांडला और सेवनी ॥

(२) नागपुर किसमत–इस में यह ज़िले हैं। भण्डारा, नागपुर, वरधा, चांदा, और बालाघाट। नागपुर में वन, और पर्बत अधिक हैं। गेहूं की खेती अधिकतर होती है। नागपुर बड़ा शहर है। और इस प्रदेश की राजधानी है। सीता बलदी में कपड़ा बहुत उत्तम बनता है। चांदा व्यापार के कारण प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में यहां हिन्दुओं की विद्या और शिल्प का बड़ा चरचा था। हींगनघाट रूई की बड़ी मण्डी है ॥

(३) छत्तीसगढ़—इस किस्मत में रायपुर, विलासपुर, सम्भलपुर तीन ज़िले हैं। यह किसमत मध्यप्रदेश के पूर्व में है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) नरबदा किसमत मध्यप्रदेश के पश्चिम में है, इस में यह ज़िले हैं । नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद, बेतूल और नीमाड ॥

नरसिंहपुर और होशंगाबाद के प्रान्त में रूई बहुत होती है । विशेष करके होशंगाबाद की भूमि ऐसी जलमय है कि लोग इसको भारत का भाग समझते हैं । इस परगने के उत्तर की ओर के गाय बैल और भैंसे अच्छे होते हैं । जबलपुर से ३० मील की दूरी पर सलेट का पत्थर भी निकलता है । चाकू और उसतरे पैना करने के काम आता है । इस धरती से कई प्रकार की रंगीन मिट्टी निकलती है । इसके सिवा खड़िया मिट्टी भी थोड़े काल से निकलने लगी है, खजूर और आम के वृक्ष स्वभावज होते हैं । चिरोंजी, लाख, हरड़, बहेड़ा, तज, मजीठ आदि इस प्रान्त में बहुत उपजती हैं । और धमीर लोग एक प्रकार के जीव को पाल कर उस से रेशम के समान टसर निकालते हैं । कई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार की जंगली लकड़ी भी उत्पन्न होती है। इस परगने में जबलपुर का कारागार बड़ा प्रसिद्ध है। इस में दुसूती दरियें और कालीन आदि बहुत उत्तम बनते हैं। और वहां ठगों के पुत्रों को यह सब शिल्प और लिखना पढ़ना सिखाया जाता है॥

बम्बई हाता।

यह हाता भारत के पश्चिम में समुद्र के किनारे किनारे पंजाब के नैऋत कोण (दक्षिण पश्चिम) से लेकर मैसूर तक चला गया है॥

सीमा—उत्तर में पंजाब, बिलोचिस्तान, पूर्व में मध्य भारत की एजण्टी मध्य प्रदेश, बगार, निज़ाम हैदराबाद की रियासत, मदरास हाता, राजपूताना, दक्षिण में मैसूर, मदरास, पश्चिम में अरब सागर॥

क्षेत्रफल—इस हाते का क्षेत्रफल १८१६०२५ वर्ग मील है। और मदरास हाते से कुछ छोटा है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वत--इस प्रांत में बड़े २ पर्वत यह हैं सतपुड़ा, विंध्याचल, पश्चिमीघाट अर्वली पर्वत, और गिरनार की पहाड़ियां करथार ॥

नदियां —सिंध, लूनी, बनास, सांभरमती, मही, नर्वदा, ताप्ती, गोदावरी, और कृष्णा आदि बड़ी २ नदियां इस हाते में हैं ॥

जलवायु--पश्चिमीघाट पर और उस से नीचे की ओर वर्षा बहुत होती है और मौसिम शर्द रहता है। सिंध का परगना गर्म और खुश्क है ॥

उपज—रूई, चावल, जौं, ज्वार, बाजरा, गेहूं, नील, मसाला, तम्बाकू, नारियल और गोआ के आम भी बड़े प्रसिद्ध हैं । पश्चिमीघाट के बनों में सागौन की लकड़ी बहुत होती है ॥

आबादी—इस अहाते की आबादी ढ़ाई करोड़ के लगभग है। भिन्न २ परगनों में भिन्न २ भाषाएं बोली जाती हैं। बम्बई के आस पास मरहटी, दक्षिण में किनारी, खंबाय की खाड़ी के आसपास गुजराती, सिंध के प्रांत में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधी । भील तथा अन्य जंगली जातियें पहाड़ों में पाई जाती हैं। इनकी भाषा सब से निराली है। ७८८८० पारसी और कुछ यहूदी भी रहते हैं॥

आमदनी—इस हाते की महसूल की आमदनी ११ करोड़ रुपया वार्षिक के लगभग है। जिस में से चतुर्थ भाग केवल अफ़ीम से प्राप्ति होती है।

व्यापार—बम्बई भारत में सब से प्रसिद्ध बंदर है। अन्य देशों से इसका व्यापार ८० करोड़ रुपया वार्षिक के लगभग होता है अन्य देशों को रूई, अफ़ीम, तेल निकालने के बीज, गेहूं, रूई के कपड़े और ऊन बहुत जाती हैं। और अन्य देशों से यह वस्तुएं अधिकतर आती हैं। रूई के कपड़े, धातुएं, कलें कोइला और मदरा॥

धर्म्म—प्रायः लोग हिन्दू हैं। मुसलमान समस्त आबादी के ५म भाग हैं। जैन ईसाई और पारसी भी पाए जाते हैं। प्राचीन काल में बुद्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत यहां अधिक था। पारसी लोग ज़रतुश्तः के अनुयायी हैं और अग्नि पूजक हैं ॥

राज्य—बम्बई का हाता एक गवर्नर साहिब के आधीन है। और सम्मति के लिये दो कौंसिलें भी उनके साथ हैं ॥

ज़िले—इस हाते के चार भाग हैं। प्रथम उत्तरीय इस में पांच ज़िले हैं। अहमदाबाद, कैरा, पांच महाल, भड़ौंच, सूरत ॥

द्वितीय मध्य भाग-इस में ६ ज़िले हैं। नासिक, खानदेश, अहमदनगर, पूना, शोलापुर, सितारा ॥

तृतीय दाक्षिणी भाग-जिस में यह सात ज़िले हैं। बलगाम, धारवार, बीजापुर, उत्तरी किनारा, थाना, रत्नागिरी और कोलावा ॥

चतुर्थ सिंध—इस में ५ ज़िले हैं, किराची, शिकारपुर, अपरसिंध फ्रंटियर, हैदराबाद, थरऐंड-पारकर ॥

बम्बई शहर बम्बई गवर्नमेंट की राजधानी है। यह शहर एक द्वीप पर बसता है। इस में ७ लाख ७१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार के लगभग मनुष्यों की बसती हैं । बम्बई में जहाज़ों के ठहरने का स्थान बहुत उत्तम है । यहां जहाज़ बनते भी हैं । और शहर में बड़े धनाढ पारसी रहते हैं । व्यापार, धन और आबादी के विचार से यह शहर भारत में मुख्य है । बम्बई से १५ दिन में डाक विलायत पहुंचती है । यहां कपड़े के कई कारख़ाने हैं ॥

ऐलिफेंटा द्वीप बम्बई के समीप इस कारण प्रसिद्ध है कि यहां प्राचीन काल में पर्वत की खोह काट कर एक बड़ा मन्दिर बनाया गया था जिस में २६ खम्ब और बहुत सी मूर्त्तियें खोदी हुई हैं ॥

अहमदाबाद सांभररमती के तट पर बसता है । मुसलमानों के राज्य में गुजरात की राजधानी था । और बम्बई हाते में तीसरे दरजे का शहर है । इस में कई अच्छी २ प्राचीन काल की इमारतें हैं । यहां कपड़े का कारखाना है ॥

कैरा—अहमदाबाद और मही नदी के बीच बसता है । बड़ा आबाद नगर है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भड़ौंच—सूरत के उत्तर की ओर बसता है। प्राचीन बन्दरगाह है। यहां रूई का व्यापार बहुत होता है॥

सूरत—तापती नदी के तट पर बसता है। और आबादी के विचार से इस हाते में चौथा शहर है। अंगरेज़ों ने व्यापार की कोठी पहिले पहिल यहां ही खोली थी॥

थाना—सलसटी द्वीप में विद्यमान है। इस से पूर्व की ओर कल्याण शहर है। जहां पैनिनस्यूलर रेलवे (Peninsular Railway) की दोनों शाखें मिलती हैं। समुद्र तट के समीप बसीन भी एक नगर है जो किसी काल में पुर्तगेज़ों की प्रसिद्ध बसती थी॥

नासिक—ख़ानदेश के दक्षिण की ओर है। कहते हैं कि इस जगह लक्ष्मण जी ने रावण की बहिन सूपनखा की नाक काटी थी। इसी कारण इसका यह नाम पड़ गयाँ है॥

ख़ानदेश—ईशान कोण में बड़ा ज़िला है। इस का मुख्य नगर धूलिया है। प्राचीन काल में ख़ांड

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति के लोग यहां रहते थे । इसी कारण इसका यह नाम पड़ गया है ॥

अहमद नगर–नासिक के दक्षिण में है । इस में अहमदनगर बड़ा शहर है । किसी काल में यह मुसलमानों की राजधानी था ॥

पूना–अहमदनगर के दक्षिण में है । इस में बड़ा शहर पूना बड़ा जंगी (सेना का) स्थान है । कभी पेशवाओं की राजधानी था । इसके पश्चिम में पार्वती पहाड़ी पर हिन्दुओं के मंदिर बने हुए हैं । ग्रीष्म ऋतु में सरकारी दफ़तर वहां चले जाते हैं । और श्रीमान् गवर्नर साहिब बहादुर ग्रीष्म में यहीं रहते हैं ॥

शोलापुर–एक गरम खुश्क ज़िला पूना और सितारा के पूर्व की ओर है । इस में बड़ा शहर शोलापुर व्यापार का स्थान है ॥

सितारा–एक पहाड़ी ज़िला पूना के दक्षिण में है । बड़ा शहर सतारा है । जो कभी मरहटों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी था। इसके वायव्य कोण में महाबलेश्वर परम आरोग्यदायक स्थान है॥

बलगाम—में बड़ा शहर बलगाम फ़ौजी स्थान है॥

धारवार—हाते बम्बई के आग्नेय कोण के समुद्र तट पर रूई के लिये प्रसिद्ध है॥

बीजापुर—किसी काल में यह नगर आदिल शाही बादशाहों की राजधानी था। यहां के क़िले में पीतल की एक बड़ी भारी तोप रखी है। जो मलकुल मौत (यमदूत) के नाम से प्रसिद्ध है॥

उत्तरीयकिनारा—हाते बम्बई का सब से दाक्षिणी ज़िला है। इस के बनों में बहुत बहुमूल्य लकड़ी मिलती है॥

उत्तरीय भाग में क़िरवार एक बन्दरगाह है। दाक्षिणी भाग में होनावर है। जिस के पूर्व की ओर आरसोपा के प्रसिद्ध जलप्रपात हैं। यहां नौ सौ फ़ुट से अधिक ऊंचाई से पानी गिरता है॥

रत्नागिरी के ज़िले में बड़ा शहर रत्नागिरि समुद्र के तट पर बसता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोलाबा एक छोटासा ज़िला बम्बई के दक्षिण में समुद्र के तट पर है ॥

बड़ाशहर इस में अलीबाग़ है । जिसको दक्षिणी किनारा भी कहते हैं ॥

सिंध ।

सीमा–इस के उत्तर में बहावलपुर, पञ्जाब और बिलोचिस्तान, पूर्व में राजपूताना और रेतस्थान, दक्षिण में झील रनकच्छ और अर्बसागर, पश्चिम में अर्बसागर और बिलोचिस्तान के पर्वत हैं ॥

क्षेत्रफल और आबादी–इस देश का क्षेत्र फल ४७०६६ वर्गमील है। आबादी कहीं २ है। परन्तु फिर भी ३२ लाख १० हज़ार से कुछ अधिक है। जिन में से ३/४ मुसलमान हैं ॥

जलवायु और उपज–इस प्रान्त की जल वायु गरम और खुश्क है। सिंधु के तटों पर खेती बाड़ी अच्छी होती है। परन्तु शेष देश प्रायः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उजाड़ है। यहां चावल बहुत होते हैं जौ, गेहूं, सब प्रकार का लवण, हींग, गुगल, मजीठ, लोबान, नील, और तेल निकालने के बीज बहुत उत्पन्न होते हैं। और अन्यदेशों को जाते हैं। खांड, मिश्री, लोहा, रांग, जस्त, सीसा, सुपारी, मिरच, नारियल, पारा, आदि वस्तुएं अन्यदेशों से यहां आती हैं॥

निवासी—इस प्रान्त में जाट और बिलोच लोग बसते हैं॥

प्रसिद्ध नगर—हैदराबाद सिन्धु नदी के तट पर बसता है इसके पूर्व में अमर कोट है। जहां अकबर बादशाह ने जन्म लिया था। शिकार पुर व्यापार का स्थान है॥

सक्खर सिंधु नदी के दाहिने तट पर रोहड़ी के सन्मुख बसता है। इस स्थान पर इन दोनों नगरों के मध्य नद पर एक ऐसा महा विचित्र रेलका पुल बना हुआ है। कि जिसके तुल्य भारत वर्ष में और कोई पुल नहीं। इस में विचित्रता यह है कि नद के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर कोई स्तम्भ नहीं। दोनों किनारों पर लोहे के शहतीरों के स्तम्भ बना कर पुल को बीच में लटका दिया है। इसको सस्पैंशन बृज (Suspension Bridge) अथवा झूले का पुल कहते हैं॥

किराची जो भारत की अतीव प्रसिद्ध बंदरगाहों में से है। और व्यापार में केवल बम्बई से दूसरे दरजे पर है। अति उत्तम शहर है। रस्ते सीधे, बाजार विस्तृत, घर स्वच्छ और उत्तम हैं। पञ्जाब के बहुत से धनी पुरुष छुट्टियों में यहां समुद्र की सैर करने आते हैं। यहां से जहाज़ विलायत को जाते हैं॥

बृटिश बिलोचिस्थान।

पञ्जाब और सिन्ध के पश्चिम में बृटिश बिलोचिस्थान का प्रान्त है। जिस को सुलेमान की श्रेणी और हाला के पहाड़ी प्रान्त भारत से पृथक् करते हैं। यह प्रदेश एक पोलिटिकल एजण्ट के आधीन है। जो सीधे श्रीमान् वायसराय और भारत के गवर्नर जनरल के आधीन हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रफल और आबादी—इसका क्षेत्रफल ४५८०४ वर्ग मील है। और आबादी १९०१ ई० की पुरुष गणना के अनुसार ३ लाख आठ हजार दोसौ है। इस में ५ ज़िले हैं। कोइटा, पशीन, थल चटयाली जहोब, बोलान और चगई ॥

प्रसिद्ध नगर कोइटा बृटिश बिलोचिस्तान की राजधानी है। और एक प्रसिद्ध छावनी है। यहां एक पत्थर का किला बना हुआ है। कोइटे से उस रस्ते की रखवाली होती है। जो कन्धार और पश्चिमी एशिया से होकर भारत को आता है। यह शहर समुद्र तल से ५६०० फुट ऊंचा है। यहां मेवे बहुधा होते हैं। इस में आठ हज़ार से अधिक आदमी बसते हैं। सिबी के निकट सिन्ध पिशीन रेलवे की दो शाखें होजाती हैं। जो बोस्तान के स्थान पर मिल जाती हैं। और बोस्तान से चमन तक एक ही लाईन जाती है। चमन रेल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की इस सड़क का अन्तिम स्टेशन है। और इस से आगे कन्धार की सीमा प्रारम्भ हो जाती है। इनके अतिरिक्त फ़ोरट सण्डेमन और लोरालाई प्रसिद्ध स्थान हैं॥

निवासी—बिलोच और बराहई लोग इस प्रान्त में बसते हैं। इनका मत इसलाम है॥

हाता मदरास।

सीमा—इसके उत्तर में मैसूर, रियासत हैदराबाद, मध्यप्रदेश और उड़ीसा है। पूर्व में बंगाले की खाड़ी, दक्षिण में भारत महासागर, और पश्चिम में अर्बसागर है॥

क्षेत्रफल—इसका क्षेत्रफल एक लाख इकावन हज़ार अस्सी वर्ग मील है। यह हाता बम्बई से कुछ ही बड़ा है॥

पर्वत—नीलगिरी की पहाड़ियां, पिलनी की पहाड़ियां, पूर्वी और पश्चिमी घाट की पहाड़ियां।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदियां—प्रसिद्ध नदियां इस हाते में गोदावरी, कृष्णा, पानार और कावेरी है। यह सब बंगाले की खाड़ी में गिरती हैं॥

उपज—इस हाते का जल वायु प्रायः गर्म है। विशेष करके पूर्वी विभाग में बहुत गरमी पड़ती है। परन्तु सरदी गरमी इतनी अधिक नहीं होती। जितनी उत्तरीय भारत में। चावल, जौ, बाजरा, ईख, नारियल, तम्बाकू, रूई, नील, सिन्कोणा, और काफ़ी, आदि वस्तुएं उत्पन्न होती हैं। लोहा बहुत पाया जाता है। सोना भी निकलता है। गोदावरी और कृष्णा के ज़िलों में हीरा भी कभी २ मिलता है। समुद्र के खारी पानी से लवण निकालते हैं॥

आबादी—यहां के निवासियों की संख्या ४ करोड़ २० लाख से कुछ अधिक है। इस हाते में तलगू, तामिल, किनारी, मलयालम भाषाएं बोली जाती हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म्म—प्रायः यहां के निवासी द्रावड़ वंश के हिन्दु हैं। मुसलमान बहुत कम हैं। ईसाई भारत वर्ष के अन्य भागों की अपेक्षा यहां अधिक पाए जाते हैं॥

राज्य—यह हाता एक साहिब गवर्नर बहादुर के आधीन है और सम्मति के लिये दो कौंसिलें भी उनके साथ हैं॥

ज़िले—इस प्रदेश में २२ ज़िले हैं। जो मदरास हाते के साहिब गवर्नर बहादुर के आधीन हैं। इन ज़िलों के नाम यह हैं। पूर्वीय तट पर गंजाम, विज़िगापटम, गोदावरी, कृष्णा, नेलोर, मदरास, चंगलपत, दाक्षिणी आरकट वा कडालोर, तञ्जोर, मदूरा, टेनोली, कडापा के भीतर के ज़िले। करनाल, बिलारी, अनन्तपुर, उत्तरीय आरकट, त्रिचनापली, सलीम, कोइमबटोर, नीलगिरी। पश्चिमी तट पर मालाबार, दाक्षिणी किनारा। इन में से गंजाम,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज़िगापटम, गोदावरी, कृष्णा, नेलोर, उत्तरी सरकारों में (Northern Circars) गिने जाते हैं। यहां चावल, रूई, खांड, तम्बाकू, और कई प्रकार के अन्न भी पैदा होते हैं। विजिगापटम बन्दरगाह है। इस में सींग के सन्दूक और हाथी दांत और सेह के कांटों का काम और सुनहरी रूपहरी चित्रकारी का काम बहुत उत्तम होता है। राज महन्दरी और मछली बन्दर में कपड़ा और छींटें बहुत उत्तम बनती हैं। मछली बन्दर, कुलंगपटम कोकोनाडा (Coconada) कोरंगा के नीचे जहाज़ ठहरते हैं। नेलोर, उत्तरीय आरकट, चंगलपत, कुडालोर वा दक्षिणी आरकट, त्रिचनापली, तञ्जोर, मदूरा, टेनोली, करनाटक प्रांत में गिने जाते हैं। जो गण्टोर से कुमारी अन्तरीप तक चला जाता है। यह प्रान्त दक्षिणी भारत के समस्त पूर्वी तट पर विस्तृत है और इस इलाके की भूमि अतीव उर्वरा है। लोग तालाब खोद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर खेती में पानी देते हैं यहां के चावल बहुत उत्तम होते हैं। परन्तु तञ्जोर में जो सब से अधिक उपजाऊ है। नहरों के पानी से खेती होती है॥

नेलोर के ज़िले में कपड़ा बहुत बनता है। और लवण बहुत उत्तम तय्यार होता है॥

उत्तरीय आरकट में चित्तौड़ एक प्रसिद्ध नगर है। आरकट के समीप वालजाह नगर व्यापार की बड़ी मण्डी है॥

मदरास शहर बंगाले की खाड़ी के तट पर बसता है। और उसकी पांच लाख नौ हजार की आबादी है। और इस हाते की राजधानी है। यद्यपि वहां जहाज़ आते हैं। और व्यापार भी बहुत होता तथापि जहाज़ों के ठहरने का स्थान अच्छा नहीं। शहर के दक्षिण की ओर फोर्ट सैंट जार्ज है। (Fort St. George) जिस में किला, तोपखाने का सदर और व्यापार की बड़ी २ कोठियां हैं। सैंट टामस की पहाड़ी (St. Thomas' Monnt) से नौ मील

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बी सड़क बड़ी उत्तम और सीधी बनी हुई है। सैदापत में अध्यापकों की शिक्षा के लिये एक ट्रेनिंग और कृषि विद्या का कालिज है॥

चंगलपत का ज़िला सब से पहिले अंगरेजों के अधिकार में आया था। ज़िले का बड़ा शहर कांजीवरम है। जिस में मन्दिर बहुत अच्छे बने हुए हैं॥

दक्षिणी आरकट के ज़िले का बड़ा शहर कडालोर है। जिस के समीप एक स्थान पोर्टूनोवू में किसी काल में लोहे का बड़ा भारी कारखाना था॥

त्रिचनापली में सोने चांदी और रत्नों के भूषण बहुत उत्तम बनते हैं। यहां चटान पर एक प्रसिद्ध किला है। और दक्षिणी भारत के सब स्थानों से यहां का तम्बाकू अच्छा होता है। श्रीरंगम का मन्दिर समस्त भारत में सब से बड़ा है॥

मदूरा शहर में बहुत उत्तम और प्राचीन इमारतें और मन्दिर बने हुए हैं॥

टिनेवली ज़िले में रूई बहुत होती है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलीम शहर में चाकू और कैंचियां आदि वस्तुएं बहुत उत्तम बनती हैं ॥

कोइमवटोर के जंगलों में बहु मूल्य वृक्ष और कई प्रकार के जंगली जीव होते हैं ॥

नीलगिरी का जल वायु अतीव सुखप्रद और इसकी विशालता अतीव मनोहर है। यहां के निवासी द्रावड़ लोग तामल नाम से प्रसिद्ध हैं। इस में काफ़ी, और चाय की खेती बहुत होती है। बड़ा शहर उटाकमंड है। यहां पर अंगरेज लोग जल वायु परिवर्तन के लिये ग्रीष्म ऋतु में जाते हैं ॥

दक्षिणी किनारा मालाबार की भांति बहुत सी नदियों से सींचा जाता है। बन, और पर्वत, अतीव रमणीय हैं। बड़े शहर मंगलौर, कल्याणपुर कन्दपुर हैं। चावल, सन्दल, आबनूस, जाइफल, दारचीनी, मिरच, सुपारी, आदि का व्यापार बहुत होता है ॥

मालाबार कोचीन के उत्तर में है। पर्वत की ओर का देश उंचा नीचा, परन्तु समुद्र के तट के निकट सम और रेतला है। कालीकट बडा शहर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। पहले यहां छीटें बहुत उत्तम बनती थीं और पालघाट, कनानोर इस ज़िले के प्रसिद्ध नगर हैं ॥

कोचीन बम्बई से दूसरे दरजे पर सब से बड़ा बंदरगाह है। यहां वृष्टि बहुत होती है। चावल बहुत उत्पन्न होते हैं। काली मिरच, दारचीनी आदि मसाले यहां से अन्य देशों को बहुत जाते हैं ॥

वेनाद के प्रांत में काफ़ी बहुत होती है। बन में सागौन, चन्दन आदि भांति २ की बहुमूल्य लकड़ियां होती हैं।

ब्रह्मा।

सीमा—ब्रह्मा देश के उत्तर में चीन, पूर्व में स्याम, और शान की रियासतें, दक्षिण में बंगाले की खाड़ी और मलाया द्वीप, पश्चिम में आसाम, बंगाल के प्रदेश और बंगाले की खाड़ी है ॥

क्षेत्रफल—समस्त क्षेत्रफल १६८५७५ वर्ग मील है।

विभाग—इस देश के दो भाग हैं उत्तरीय और दक्षिणीय दोनों भाग एक लैफ़िटिनण्ट गवर्नर साहिब बहादुर के आधीन हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी—इस देश में बानवे लाख त्रेपन हज़ार के लग भग मनुष्य बसते हैं जिन में से अधिक तर दक्षिणी ब्रह्मा में रहते हैं ॥ यहां के निवासी गिलट के काम और बड़े घंटे बनाने में बड़े निपुण हैं। प्रायः मनुष्य लिखना पढ़ना भी जानते हैं ॥

धर्म्म—यहां के निवासी बौध हैं। और इस धर्म्म के बड़े २ मंदिर समस्त बड़े २ शहरों में पाए जाते हैं। प्रायः लोग श्वेतगज को अति पवित्र मानते हैं। आर उसकी पूजा करते हैं ॥

दक्षिणीय ब्रह्मा।

यह देश बंगाले की खाड़ी के पूर्वी तट पर चाटगाम से लेकर मलाया के प्रायद्वीप तक चला गया है। और विस्तार में मध्य देशसे कुछ छोटा है। इसमें ५३८९००० मनुष्य बसते हैं ॥

क्षेत्रफल—इसका क्षेत्रफल ८११६० वर्गमील है ॥

पर्वत, नदियां, और अन्तरीप आदि—दक्षिणीय ब्रह्मा में पर्वतों की कई श्रेणियां उत्तर से दक्षिण को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला गई हैं । जिन के बीच में यह बड़े २ नद बहते हैं। एरावती, सितांग, और सालिन । निगरीस, अन्तरीप, दक्षिण में । मरतबान की खाड़ी में सितांग और सालिन नद गिरते हैं । रामरी आर चड़ोबा उत्तर में द्वीप हैं ॥

जलवायु उपज और व्यापार–वर्षा अधिक होती है । ऋतुओं में कोई अधिक भेद नहीं । लोग प्रायः खेती वाड़ी करते हैं । रूई और रेशम के वस्त्र भी बुनते हैं। अन्यदेशों को प्रायः चावल, सागौन, लकड़ी, गोंद, रूई, और चमड़ा जाता है । और अन्यदेशों से रूई के कपड़े, कच्चा रेशम और सपारी आदि आते हैं इस देश में सड़कें बहुत नहीं। व्यापार अधिकतर नदियों के रास्ते हाता है ॥

देशीय विभाग–दक्षिणी ब्रह्मा चार किसमतों में विभक्त है । प्रथम किसमत अराकान इस में चार ज़िले हैं । अक्याब, उत्तरी अराकान, क्यूकप्यू, संडोई ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय क़िसमत पीगू---इसमें ५ ज़िले हैं। रंगून, इन्थावती, पीगू, थरावर्ता, प्रोम ॥

तृतीय क़िस्मत इरावती इसमें चार ज़िले हैं। थोंगवा, बसीन, हैन्ज़ड़ा, म्याङ्गम्या, जिसको ब्रह्मा की भाषा में मेमियू कहते हैं ॥

चतुर्थ क़िसमत तनासरम इस में ६ ज़िले हैं। टोंगो, सालियन, थाटन, एमहर्सट, टोवई, मरगोई ॥

प्रसिद्ध नगर अक्याब—अराकान के इलाके में कलाडोन नदी के मुहाने के समीप बसता है। यहां से अन्य देशों को चावल बहुत जाते हैं ॥

रंगून पीगू के इलाके में इरावती की पूर्वी शाखा पर बसता है। यहां पर चावल और लकड़ी का बड़ा व्यापार होता है। रंगून दक्षिणी ब्रह्मा की राजधानी है। इस की आबादी दो लाख चौतीस हज़ार से अधिक है। बसीन, प्रोम और टोंगो भी इस इलाके में बड़े २ शहर हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनासरम के इलाके में मौलमीन बड़ा शहर है यह सालिवन नदी के मुहाने पर बसता है । यहां लकड़ी का व्यापार बहुत होता है दक्षिण में मरगोई एक और शहर है ॥

उत्तरी ब्रह्मा ।

उत्तरी ब्रह्मा पीगू और स्याम के उत्तर में है । इस के पश्चिम में आराकान और आसाम हैं । विस्तार में दक्षिणी ब्रह्मा से बड़ा है । परन्तु आबादी केवल अठतीस लाख पचास हज़ार है ॥

क्षेत्रफल—इस का क्षेत्रफल ८३३९० वर्गमील है ॥

देशीयविभाग—उत्तरीय ब्रह्मा चार किसमतों में विभक्त है । प्रथम किसमत मिम्बू—इस में चार ज़िले हैं । पकोकू, मिम्बू, मगोय, थीटमियो ॥

द्वितीय किसमत मांडले—इस में पांच ज़िले हैं ॥ भामू, मांडले, माईटकीना, कथा, रुबीमाईज़ अर्थात् वह इलाका जिसमें हीरे की खाने हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय किसमत सगाइंग (जिसको ब्रह्मी भाषा में सगाई बोलते हैं) इस में चार ज़िले हैं। शिबू, सिगाइंग, दक्षिणी चिण्टीवन, उत्तरीचिण्टविन ॥

चतुर्थ किस्मत मेइकटीला इसमें भी चार ज़िले हैं। क्यूकसी, मेइकटीला, मेथिन, मेअंगीन ॥

प्रसिद्ध नगर—मांडले राजधानी है। और एरावती नदी पर नया बसा है। इसकी आबादी एक लाख चौरासी हज़ार के लगभग है। यहां मन्दिरों और घरों की काष्ठ की छतें विचित्र सुन्दर और चोटीदार बनी हुई हैं। रंगून और मांडले के बीच अब रेल चलती है। अमरपुर और आवा जो पहिले राजधानी रह चुके हैं। इसके निकट ही हैं। परन्तु अब उजाड़ पड़े हैं ॥

भामू उत्तर की ओर चीन के साथ व्यापार की बड़ी मण्डी है ॥

यह देश पहिले एक स्वतन्त्र ब्रह्मी राजा के आधीन था। परन्तु सन १८८६ ई० से अंगरेज़ों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकशा हिन्दुस्तान रियासतें आदि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
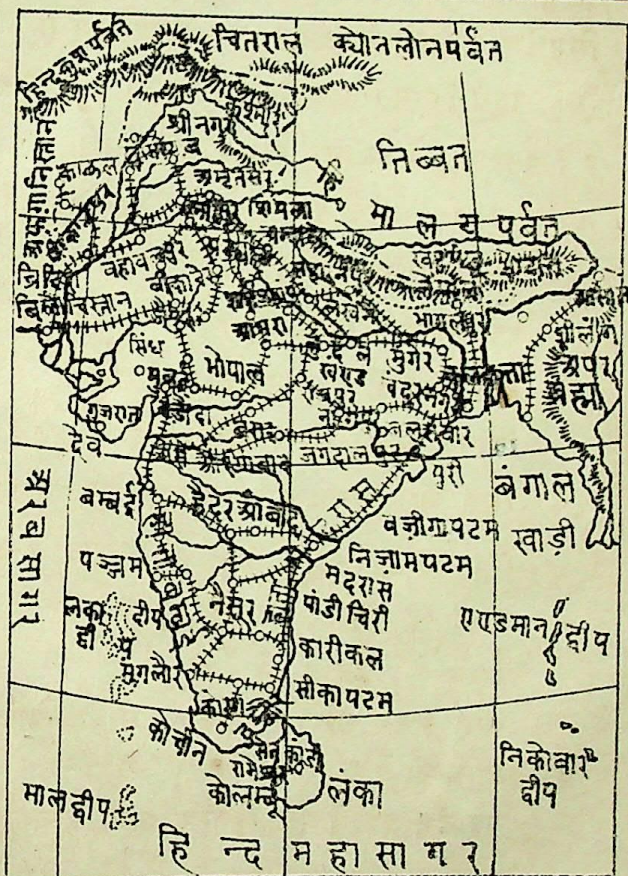
के अधिकार में आगया है। और अब दोनों भाग एक ही लैफ़टिनण्ट गवर्नर के आधीन हैं॥

भारत की कर देने वाली रियासतें—भारत में १६० से अधिक देशी रियासतें हैं। यह बृटिश गवर्नमैण्ट के आधीन हैं। इनका समस्त क्षेत्रफल ६७९३९३ वर्ग मील है और आबादी छः करोड़ चौबीस लाख इकसठ हज़ार से कुछ अधिक है। इन में से प्रायः रियासतें बहुत छोटी २ हैं। कई बड़ी रियासतों में अवलोकनार्थ अंगरेज़ी अफ़सर रहते हैं। जिन्हें रैज़ीडण्ट कहते हैं। शेष छोटे २ रजवाड़े, गवर्नरों लैफ़टिनेण्ट गवर्नरों, चीफ़ कमिश्नरों और कमिश्नरों आदि हाकिमों से सम्बंध रखते हैं॥

बंगाल प्रदेश की रियासतें।

इस प्रान्त में बहुत सी छोटी २ रियासतें हैं। जिन की आबादी सैंतीस लाख अडतालीस हज़ार से अधिक है। उड़ीसा और छोटे नागपुर में अनेक छोटे २ रजवाड़े हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके सिवा निम्नलिखित रियासतें और हैं—

सिक्कम—यह छोटा सा पहाड़ी इलाक़ा नैपाल और भूटान के मध्य में विद्यमान है ॥

कूच विहार—भूटान के दक्षिण में। और टिपरा की पहाड़ियां ज़िला टिपरा के पूर्व की ओर हैं ॥

मनीपुर—आसाम और ब्रह्मा के मध्य में पहाड़ी इलाका है। यहां आबादी बहुत अधिक नहा दक्षिण की ओर लूशाई की पहाड़ियां हैं ॥

संयुक्त प्रदेश की रियासतें।

इस प्रान्त के रजवाड़ों की आबादी आठ लाख दो हज़ार के लगभग है ॥

रामपुर—रूहेलखण्ड में एक छोटी सी रियासत है। यहां रूहेल जाति के पठान बहुत रहते हैं इस इलाके में चादरें बहुत अच्छी बनती हैं। शहर रामपुर में नबाव रहते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल—हिमालय के पर्वतों में एक रियासत है। इस इलाके में से गंगा और यमुना निकलती हैं। बड़ा शहर टिहरी है॥

पंजाब की रियासत।

पंजाब में कश्मीर राज्य को मिला कर समस्त कर देने वाली रियासतों का क्षेत्रफल अंगरेज़ी इलाके से अधिक है। परन्तु इन रियासतों की आबादी सरकारी इलाके की आबादी से केवल एक तिहाई है। सब रियासतें गणना में ३४ हैं आबादी चवालीस लाख पच्चीस हजार के लगभग है॥

बड़ी २ रियासतें यह हैं। बहावलपुर दक्षिण में। सिक्खों की रियासतें पूर्व में। पहाड़ी रियासतें हिमालय पर्वत में॥

कश्मीर—यह रियासत पंजाब के उत्तर में है और श्रीमान् गवर्नर जनरल के आधीन है। जिन की ओर से यहां एक रैज़िडण्ट रहता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस राज्य के यह भाग हैं काश्मीर की सुन्दर घाटी नैऋत कोण में। छोटा तिब्बत उत्तर में। लद्दाख़ ईशान कोण में, जम्मू दक्षिण में॥

सरकार अंगरेज़ी ने सन् १८४६ ई० में यह महाराजा गुलाबसिंह को एक करोड़ रुपये के बदले देदिया था। उन की सन्तान अब तक यहां राज्य करती है। भारत वर्ष में यह एक विचित्र खण्ड है। चारों ओर प्रफुल्लित पर्वतों से घिरा हुआ है। और हर स्थान में जल तरंगें मारता हुआ दीख पड़ता है। नाना प्रकार के मेवे जैसे बादाम, सेव, और नासपाती आदिक उत्पन्न होते हैं। ऊंचे पर्वतों पर सदैव बर्फ़ जमी रहती है। और स्रोत स्रवते रहते हैं। नीची धरती पर धान और ऊंचाई पर गेहूं और जौ आदि उत्पन्न होते हैं। केसर विशेष करके इस देश की विचित्र वस्तु है। और कई प्रकार के अंगूर अधिकता से उपजते हैं। पश्मीने का काम अर्थात् दुशाले, रुमाल, आदि जो समस्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत में प्रसिद्ध हैं भेड़ों की ऊन से बनते हैं। और यह ऊन तिब्बत से आती है। पहाड़ों से लोहा निकलता है। यहां के निवासी सुन्दर और स्वरूपवान होते हैं॥

प्रसिद्धनगर—श्रीनगर काश्मीर की राजधानी जेहलम नदी के निकट कई झीलों से घिरा हुआ है। झीलों के पानी पर अच्छे २ बागीचे और फुलवाड़ियें तैरती फिरती हैं! इस्लामाबाद एक और शहर जेहलम के तट पर शिल्पकारों की बस्ती है। लद्दाख़ में प्रसिद्ध नगर लय्या है॥

जम्मू दक्षिण की ओर एक और बड़ा शहर है गिलगित और इस्कार्दू बड़े २ शहर हैं। इस्कार्दू छोटे तिब्बत की राजधानी है॥

बहावलपुर की रियासत एक नवाब के आधीन है। और पंजाब के दक्षिण की ओर है। इसमें बड़ा शहर बहावलपुर घारा नदी के तट पर बसता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह देश प्रायः मरूस्थल और उजाड़ है। जल पहुंचाने का प्रबन्ध अब होता जाता है॥

मालेरकोटला—पठानों की एक प्रसिद्ध रियासत है॥

पटिआला—एक फलदायक प्रान्त है। और सिक्खों की रियासतों में सब से बड़ी रियासत है। बड़ा शहर पटियाला पूर्व की ओर है॥

इस के सिवाय जींद, नाभा, कपूरथला और फ़रीदकोट, अन्य सिक्ख रियासतें हैं॥

मंडी—व्यास नदी के तट पर॥

चम्बा—जम्मू के पूर्व में, और बिलासपुर सतलुज के तट पर और सरमोर शिवालिक पर्वत में बड़ी २ पहाड़ी रियासतें हैं॥

राजपूताने का एजण्टी।

सीमा—इस के उत्तर मे पंजाब पूर्व में आगरा किसमत, रियासत गवालियर और मध्य प्रदेश, दक्षिण में मालवा और बम्बई हाते का कुछ भाग,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पश्चिम में सिंध का इलाका। राजपूताने में समस्त बीस रियासतें हैं। क्षेत्रफल १२७५४१ वर्गमील है। और आबादी एक करोड़ के लग भग है॥

अर्वली पर्वत इस देश को दो भागों में विभक्त करता है। वायव्य कोण के भाग में धरती प्रायः बंजर है उत्पत्ति बहुत थोड़ी होती है। इस भाग में भारत का एक बड़ा मरुस्थल है। कूएं थोड़े हैं। और जो हैं वह बहुत गहरे हैं। और शीघ्र सूख जाते हैं। इस देश के राजा प्रायः राजपूत हैं। और अधिकतर इसी जाति के मनुष्य यहां बसते हैं। इसी लिये इस को राजपूताना कहते हैं। इस खण्ड में हिन्दी भाषा बोली जाती है। और मारवाड़ी साहुकार अधिकता से रहते हैं। और यह लोग समस्त भारत में व्यापार करते हैं॥

राजपूताने के मध्य में छोटा सा ज़िला अजमेर का है। जो सरकार अंगरेज़ी के अधीन है। और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजपूताने के साहिब एजण्ट गवर्नर जनरल बहादुर का मुख्य दफ़तर अजमेर में है ॥

अजमेर के ज़िले और मेहरवाड़ा के दीवानी और फ़ौजदारी प्रबन्ध के लिये यहां एक कमिश्नर साहिब और उन के दो एसिस्टैण्ट रहते हैं। जो साहिब एजण्ट गवर्नर जनरल बहादुर के अधीन हैं।

अजमेर का शहर टीलों पर बसा हुआ है और इसकी चारदीवारी पत्थर की है। इस स्थान पर ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह बड़ी प्रसिद्ध है। मेओकालिज अजमेर जिसमें राजाओं के लड़के शिक्षा पाते हैं। देखने योग्य इमारत है। और पश्चिम की ओर दो कोस पर एक ग्राम में पुष्कर नामक तालाब हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है ॥

राजपूताने में बड़ी २ रियासतें यह हैं। उत्तर में बीकानेर और अलवर, पूर्व में किशनगढ़ जयपुर, भरतपुर, धालपुर और टोंक, दक्षिण में बूंदी, कोटा परतापगढ़, बंसबाड़ा, मेवाड़ वा उदयपुर, पश्चिम में मारवाड़ वा जोधपुर, जैसलमेर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) रियासत धौलपुर आगरे से नैऋत कोण की ओर है। इस रियासत में लाल पत्थर का पहाड़ ६० मील तक चला गया है। यह पत्थर इमारत के काम आता है। पूर्व की ओर धरती बहुत फलदायक है। हर प्रकार के अन्न उत्पन्न होते हैं। बाजरा और जवार अधिक होती है॥

(२) भरतपुर—यह रियासत मथुरा के नैऋत कोण में है॥

इस इलाके में भरतपुर और डीग प्रसिद्ध नगर हैं। भरतपुर राजधानी है। यहां एक प्रसिद्ध किला था। अंगरेज़ों ने सन् १८२६ ई० में जीता था। डीग में लाल पत्थर की खान है। और शहर में फ़व्वार स्थान २ पर लगे हुए हैं। यहां का राजा जाट वंश से है॥

(३) भरतपुर के निकट वायव्य कोण में अलवर और माचीरी का राज्य है। यहां की राजधानी अलवर है जिस के चारों ओर एक पक्का कोट है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लासवारी पर लार्डलेक ने सन् १८०३ ई० में सेंधिया की सेना को पराजय किया था ॥

(४) जयपुर का राज्य भरतपुर से मिला हुआ है। यह इलाक़ा कोई डेढ़सौ मील लम्बा और साठ मील चौड़ा है। कई खण्ड इस राज्य के फलदायक हैं। गेहूं, रूई, तम्बाकू, और भारत के प्रायः अन्न इसमें अधिकता से उत्पन्न होते हैं। उपज और आबादी के विचार से वह रियासत राजपूताने की समस्त रियासतों से बढ़ कर है ॥

शहर जयपुर एक अति सुन्दर नगर है। इस के बाज़ार बड़े चौड़े और खुले हैं। स्थान २ पर पत्थर के चौक हैं। यहां बड़ी २ विचित्र इमारतें हैं। यहां का अजायब घर और पुराने महल देखने योग्य हैं। यहां एक बहुत प्रसिद्ध चिकित्सालय है। यहां पर बहुत से कालिज और पाठशालाएं हैं ॥

ज़िला सांभर और संघना में नमक उत्पन्न होता है। सांभर अजमेर से २२ कोस की दूरी पर खारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी की एक झील है। तांबे, फिटकड़ी और संगमरमर की खाने भी इस राज्य में हैं ॥

(५) टोंक की छोटी सी रियासत जयपुर के दक्षिण में है। यहां एक नवाब का राज्य है टोंक का शहर बनास नदी के तट पर बसता है ॥

(६) बून्दी का राज्य टोंक के दक्षिण में है छोटी सी रियासत है। और बूंदी शहर पहाड़ के तलहटी में बसता है। यहां के राजा का दुर्ग पत्थर का है और बहुत विस्तृत है ॥

(७) कोटे का राज बूंदी के दक्षिण में पूर्व और दक्षिण की ओर सेंधिया के राज्य से घिरा हुआ है। इस रियासत की वार्षिक आय ५० लाख रु० के लग भग है। कोटे नगर में प्रायः घर पत्थर के और सुन्दर बने हुए हैं ॥

(८) उदयपुर के राज्य को मेवाड़ भी कहते हैं। इसकी सीमा अजमेर, बूंदी, और टोंक, और सेंधिया, के इलाकों से मिली हुई है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक आय ६० लाख रु० के लग भग है। ईख, तम्बाकू, नील, गेहूं, चावल आदिक यहां की उपज हैं॥

उदयपुर का शहर बनास नदी के तट पर पहाड़ से घिरा हुआ है। इसके पश्चिम की ओर एक झील है जिसके मध्य में राजा का महल जगमंदिर नामक संखमरमर का अति उत्तम बना हुआ है। नाथद्वारा हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। चित्तौडगढ़ उदयपुर से ७० मील की दूरी पर बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध दुर्ग है॥

उदयपुर से बारह कोस की दूरी पर गन्धक और लोहे की खान है॥

(९) सिरोही का छोटा सा इलाका गुजरात प्रान्त के उत्तर में है। इसकी आमदनी ५० हज़ार रुपया वार्षिक से अधिक नहीं। इस इलाके में आरोग्य प्रद स्थान आबू है। जहां भारत के गवर्नर जनरल बहादुर आर वाइसराय के एजण्ट साहिब रहते हैं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आबू में जैन मत के बड़े ऐश्वर्य्यमय मन्दिर बने हुए हैं ॥

(१०) जोधपुर का राज्य सिरोही और उदय पुर के उत्तर में राठौर राजपूतों की राजधानी है। इस प्रान्त में सीसे और संगमरमर की खाने हैं। नागोर, पाली, डीडवाना, आदि कई बड़े २ नगर हैं। जोधपुर के इलाके को मारवाड़ कहते हैं। गेहूं, मोठ, बाजरा, आदि यहां की उपज है इसकी राजधानी जोधपुर मरुस्थल में बसता है। और यहां एक पक्का दुर्ग है ॥

(११) जैसलमेर एक रेतस्थली खण्ड भट्टी राजपूतों की रियासत है। यह जोधपुर के वायव्य काण की ओर है ॥

(१२) बीकानेर का राज्य जैसलमेर के ईशान कोण और जोधपुर के उत्तर में है। यह रेतस्थली भूमी का एक बहुत बड़ा बंजरखण्ड है। यहां वर्षा बहुत कम होती है। कुएं दो सौ फ़ुट से अधिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरे हैं। इस लिये केवल बाजरा और मोठ ही अधिक उत्पन्न होते हैं। इस इलाके में भुटनेर का किला अतीव दृढ़ और पुराना बना हुआ है। बीका-नेर और जैसलमेर के रेतस्थान में सज्जी बहुत उत्पन्न होती है ॥

मध्य भारत की एजण्टी।

मध्य भारत की एजण्टी में छोटी बड़ी सब ७१ रियासतें हैं। यह सब की सब एक उच्च अधिकारी के आधीन हैं। जिन को गवर्नर जनरल साहिब बहादुर का एजण्ट कहते हैं। यह साहिब इन्दौर में रहते हैं। इन रियासतों की आबादी छियासी लाख उनतीस हज़ार के लगभग है ॥

सीमा—इन के उत्तर में संयुक्त प्रदेश और राज-पूताना पूर्व में बङ्गाल, दक्षिण में मध्य प्रदेश और बम्बई प्रदेश का कुछ भाग पश्चिम में गुजरात, बम्बई का हाता और राजपूताना। इन में बड़ी २ रियासतें यह हैं बुन्देलखंड,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाघेलखंड, पन्ना, भूपाल, इन्दौर, ग्वालियर, और रीवा ॥

(१) रीवा की रियासत इलहाबाद के दक्षिण और बुन्देलखंड के पूर्व में है। यह राजपूतों की रियासत है। इस में खानें और वन बहुत हैं। बड़ा शहर रीवा है। भारत में पत्थर के कोइले की सबसे बड़ी खान रीवा के राज्य में है॥

(२) रीवा के पश्चिम में बुन्देलखंड बुंदेले राजपूतों का देश है। इस का बड़ा भाग अंगरेज़ी इलाके में है। शेष भाग ३५ रियासतों और जागीरों में बटा हुआ है। बुन्देले राजपूत ५०० वर्ष से इस देश में रहते हैं। और पहले बड़े लुटेरे प्रसिद्ध थे॥

(३) बुन्देलखण्ड के पूर्व की ओर पन्ना की रियासत में हीरे और पन्ने की खानें हैं। इसी लिये इस का यह नाम प्रसिद्ध होगया है। खास शहर पन्ना विन्ध्याचल की पहाड़ी भूमि पर बसता है। बुन्देल खण्ड के पश्चिम में मालवा एक बड़ी विस्तृत रिया-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत है। भूपाल की बेगम, महाराजा हुलकर और महाराजा सिन्धिया के राज्य इसी प्रान्त में हैं। इस प्रान्त में ईख, और कई प्रकार के अन्नों के सिवा, तम्बाकू, अफ़ीम, और रूई बहुत उत्पन्न होती है॥

(४) भूपाल की रियासत नर्बदा के उत्तर में एक बेगम के अधिकार में है। इस की राजधानी भूपाल बेतवा नदी के समीप है। पुलीटिकल एजण्ट साहिब शहर सीहोर में, जो भूपाल से पश्चिम की ओर है, रहते हैं। इसलाम नगर भी इस रियासत का प्रसिद्ध नगर है। भूपाल के आस पास के घोड़े बड़े बल वाले होते हैं॥

(५) इन्दौर अर्थात् महाराजा हुलकर का राज्य नर्बदा नदी के आरपार है। इस रियासत का क्षत्र-फल नौ हजार पांच सौ वर्ग मील है। झाड़ियें बन और पहाड़ियें इस राज्य में बहुत हैं। उत्तरीय भाग चम्बल नदी और उस की शाखाओं से सींचा जाता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और दक्षिण भाग में नर्बदा नदी जल पहुंचाती है। इस रियासत की धरती फलदायक है। हर प्रकार का अन्न, ईख, अफ़ीम और रूई, अधिक उत्पन्न होती है। और कई स्थानों पर कपड़े की कलें चलती हैं। हिन्दुओं की आबादी अधिक है। गोंड भील आदि प्राचीन निवासी पहाड़ों में रहते हैं। महाराजा हुलकर की राजधानी इन्दौर बड़ा विस्तृत और धनी नगर है। महोव में अंगरेजों की बड़ी छावनी है॥

(६) महाराजा सिन्धिया का राज्य ग्वालियर के नाम से प्रसिद्ध है। नर्बदा और चम्बल के मध्य का कुछ भाग भी इसी के राज्य में है। इस रियासत के कई भाग हैं। इसके उत्तरीय भाग उष्ण रेतले और पहाड़ी हैं। दक्षिणी भाग शीतल हैं। और उनकी भूमि फलदायक है॥

ग्वालियर इस की राजधानी है। इस शहर के निकट एक प्राचीन पहाड़ी दुर्ग है। दक्षिण में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उज्जयन शहर है। जो सिपरा नदी के तट पर बसता है। इस के समीप ही प्राचीन शहर उज्जयन के खण्डर विद्यमान हैं। यह नगर किसी समय में मालवे के प्रसिद्ध महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी थी।

मध्यप्रदेश की रियासत।

इस इलाके में बहुत सी छोटी २ रियासतें हैं। जिन में जंगली जातियें आबाद हैं। और बनों के सिवा कुछ नहीं दीखता। सब से बड़ी बस्तार की रियासत है। इस की राजधानी बस्तार अथवा जगदालपुर है। जो गोदावरी नदी की शाखा इन्द्रावती के तट पर बसता है। लोग मिट्टी के झोंपड़ों में रहते हैं। इन रियासतों की आबादी बीस लाख के लगभग है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद या नवाब निज़ामुल्मुलक का राज्य।

समस्त कर देने वाली रियासतों में हैदराबाद सब से बड़ी और प्रसिद्ध रियासत है ॥

सीमा—उत्तर में बरार, और मध्य प्रदेश, पूर्व में मध्यप्रदेश और मदरास का हाता, दक्षिण में मदरास का हाता पश्चिम में बम्बई का हाता। विस्तार में यह रियासत मध्यप्रदेश के बराबर है इसकी आबादी एक करोड़ ग्यारह लाख से कुछ अधिक है ॥

धरातल आदि गोदावरी, कृष्णा, तुंगभद्रा, आदि नदियां इस देश को सींचती हैं। धरती प्रायः फलदायक है, परन्तु कई भागों में जङ्गल ही जङ्गल पाए जाते हैं। इस में नाना प्रकार के अन्न, रूई, और तेल निकालने के बीज अधिकतर उत्पन्न होते हैं। कोइला भी पाया जाता है यहां के निवासी तिलङ्ग और मरहटे हैं। मुस-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लमानों की संख्या भी बहुत है जो उर्दू बोलते हैं। यहां के मुख्य अधिकारी को नवाब निज़ामुल्मुल्क वा निज़ाम कहते हैं। यह रियासत सीधी भारत के श्रीमान् गवर्नर जनरल के आधीन है। जिनकी ओर से एक रैज़ीडैण्ट हैदराबाद में रहता है॥

प्रसिद्ध नगर—हैदराबाद मूसा नदी के तट पर इस रियासत की राजधानी है। इस शहर में अर्ब और पठान अधिक निवास करते हैं। समस्त आबादी साढ़े चार लाख के लग भग है। हैदराबाद के समीप हुसैन सागर एक बनाई हुई झील है। जिसका घेर कई मील का है। हैदराबाद के समीप गोलकण्डा कभी हीरों की खान के कारण प्रसिद्ध था। सिकन्दराबाद में अंगरेजों की भारत में सब से बड़ी छावनी है। कुछ आगे बोलाराम है जहां निज़ाम की फौजें रहती हैं वारंगल हैदराबाद के ईशा न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोण की ओर कभी हिन्दुओं के राज्य की राजधानी था। वायव्य कोण में बेदर प्राचीन काल में मुसलमानों की राजधानी था। गुलबर्गा प्रसिद्ध बादशाही शहर है और उस में मकबरे बहुत हैं। औरंगाबाद, दौलताबाद प्रसिद्ध स्थान हैं॥

बरार अथवा वह ज़िले जो नवाब हैदराबाद ने सरकार को समर्पण कर दिये हैं॥

सीमा—उत्तर और पूर्व में मध्य प्रदेश, दक्षिण में हैदराबाद की रियासत, पश्चिम में बम्बई हाते का कुछ भाग। और आबादी तीस लाख के लग भग है॥

बरार रूई के लिये प्रसिद्ध है। यहां भाषा प्रायः मरहटी बोली जाती है। इस प्रान्त का बड़ा शहर अकोला देश के मध्य में है। जिसकी आबादी तीस हज़ार के लग भग है। अमरावती रूई की बड़ी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडी है। एलिचपुर किसी समय मुसलमानों की राजधानी था॥

बम्बई से नागपुर जाने वाली रेल इस सूबे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गई है॥

यह देश १८५३ ई० में हैदराबाद के नवाब ने कंटिनजेण्ट सेना सम्बन्धी ऋण के विस्तार में सरकार अंगरेज़ी को दे दिया था। पहिले हैदराबाद का रैज़ीडण्ट बरार का चीफ़ कमिश्नर हुआ करता था॥

परन्तु निज़ाम हैदराबाद ने हाल में बरार सरकार अंगरेज़ी को देदिया है। और देश के प्रबन्ध के लिये यह इलाका मध्य प्रदेश में मिला दिया गया है॥

हाते बम्बइ की कर देने वाली रियासत।

बम्बई हाते में देशीय रियासतें बहुत हैं। परंतु इन में बहुतसी छोटी २ हैं। बड़ोदे सहित जो भारत गवर्नमैण्ट के आधीन हैं उनकी आबादी नब्बे लाख के लगभग है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ैरपुर की रियासत सिंध के ईशान कोण में है। बड़ा शहर ख़ैरपुर सिंध नदी के निकट बसता है॥

कच्छ—अर्धवृत्ताकार का लम्बा सा प्राय-द्वीप कच्छ की खाड़ी के उत्तर में है। रण नामक एक खारी झील इस को सिंध देश से पृथक करती है। यह झील बहुत थोड़ा गहरी है। वर्षा ऋतु में पानी से भरपूर होजाती है। और अन्य ऋतुओं में सूखी पड़ी रहती है। और इन दिनों में इस में एक नमक की तह जम जाती है। इसमें जंगलीगधों और मखियों के सिवा कोई जीव जीता नहीं रहता है। इस रियासत की धरती प्रायः बंजर है। घोड़े और गोरख़र बहुधा पाये जाते हैं॥

निवासी—हिन्दू और मुसलमान हैं और इन की संख्या तुल्य है। यहां के प्रधान अधिकारी को राव कहते हैं। उस के आधीन २०० के लगभग और सरदार हैं। बड़ा शहर भुज रियासत के मध्य में है। मण्डवी एक बंदरगाह है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात—गुजरात की रियासतें खंबायत की खाड़ी के तट पर विद्यमान हैं। बड़ोदे का राजा मरहटा है। जिस को गाइकवाड़ कहते हैं। गुजरात की रियासतों में यह सब से बड़ी रियासत है। यहां का वर्तमान राजा बड़ा बुद्धिमान् और शासनीक है। इस ने अपनी रियासत में बहुत से आवश्यक और लाभकारी सुधार किये हैं। शेष रियासतें यह हैं काठियावाड़, पालनपुर और महीकन्ता और रेवाकन्ता। काठियावाड़ का इलाका पहाड़ी है परन्तु गुजरात का अधिक भाग फलदायक मैदान है। यहां नाना प्रकार के अन्न, रूई, और ईख, उत्पन्न होते हैं। गुजराती भाषा प्रायः बोली जाती है। कट्टी, कुली, भील आदि प्राचीन जातियें पहाड़ी जिलों में बसती हैं। यहां के निवासी प्रायः हिन्दू हैं। भारत के सब भागों की अपेक्षा यहां जैनी मत के अनुयायी अधिक पाए जाते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काठियावाड़ में बड़े शहर यह हैं। राजकोट, जो रियासत के मध्य में है भवनगर पूर्व में, पूरबन्दर एक बन्दरगाह है। द्वारका हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ पश्चिम में है॥

सोमनाथ–दाक्षिणी तट पर किसी समय बड़ा प्रसिद्ध मन्दिर था जिस को सुलतान महमूद गज़नवी ने लूटा था। जूनागढ़ के समीप गिरनार की पहाड़ी है। जैन लोगों का बड़ा तीर्थ है। समस्त भारत में केवल जूनागढ़ रियासत के बनों में शेर बबर मिलते हैं। काठियावाड़ के कोई २ राजा बड़े बुद्धिमान हैं। विद्या और रेल की वृद्धि में इन्होंने बड़ा परिश्रम किया है॥

खम्बायत जो अब उजड़ और टूटी फूटी हालत में है, मही नदी के दहाने के समीप एक नवाब के आधीन है॥

गायकवाड़ बड़ौदा के राज्य में दो बड़े शहर बड़ोदा और डीसा है। बड़ोदा राजधानी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराजा के महल और कालिज दर्शनीय इमारतें हैं। डीसा उत्तर में छावनी है। और यहां अन्न का व्यापार बहुत होता है। और आबादी साढ़े उन्नीस लाख के लगभग है। जिन में से प्रायः हिन्दू हैं॥

कोलापुर रत्नागिरि के आग्नेयकोण में, सावंत वाड़ी गोआ के उत्तर में, दो प्रसिद्ध मरहटी रियासतें हैं।

मसूर !

मदरास के पश्चिम की ओर दाक्षिण के मैदान में स्थित है। पचपन लाख उनतालीस हज़ार के लगभग आबादी है। किनारा भाषा बोली जाती है। उत्तर के सिवा और सब ओर से छोटी२ पहाड़ियों से घिरा हुआ है॥

तुंगभद्रा और कावेरी दो नदियें इस में बहती हैं। सोने की खानों का काम कुछ दिनों से फिर प्रारम्भ होगया है। पश्चिमी घाट पर काफ़ी बहुत उत्पन्न होती है। और यहीं से इमारती लकड़ी भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलती है। मैसूर हैदरअली और टीपू के समय में बड़ी बलवान रियासत होगई थी अब एक महाराजा के आधीन है॥

प्रसिद्धनगर—बङ्गलोर मैसूर के रेज़ीडण्ट के रहने का स्थान है। बड़ी भारी अंगरेज़ी छावनी है। इसके बाग प्रसिद्ध हैं। इस शहर की जलवायु शीतल और सुख प्रद है। मैसूर महाराजा के रहने का स्थान है और रियासत की राजधानी है। यह भी बड़ी छावनी है। श्रृंगापट्टम किसी समय में मैसूर की राजधानी था॥

मैसूर के पश्चिम की ओर कोरग का छोटा सा अंगरेज़ी इलाका मैसूर के रेज़ीडण्ट के आधीन है। धरती प्रायः पहाड़ी है। काफ़ी और इलाचियां बहुत उत्पन्न होती हैं। बड़ा शहर मरकारा है। कोरग की समस्त आबादी एक लाख अस्सी हज़ार के लग भग है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाता मदरास की करदेने वाली रियास्तें ।

ट्रावनकोर—इस प्रान्त की सब से बड़ी रियासत ट्रावनकोर कुमारी अन्तरीप के वायव्य कोण में है । धरती अच्छी हरी भरी और प्रफुल्लित है । कालीमिरच और दारचीनी की उपज के लिये प्रसिद्ध है । ट्रीवण्डरम राजधानी है । कोइला छावनी और इलपी बंदरगाह है ॥

कोचीन—यह छोटीसी रियासत ट्रावनकोर और मालावार के मध्य में है । इसकी राजधानी अरङ्कोलम है । और त्रिचुर बड़ा शहर उत्तर की ओर बसता है । ट्रावङ्कोर और कोचीन में गमना गमन अधिक तर समुद्र के रास्ते से होता है । इनमें इसाई बहुत बसते हैं ॥

पुदुकोटा—यह एक और छोटीसी रियासत टिञ्जोर के नैऋत कोण में है ॥

मदरास प्रदेश की समस्त रियासतों में २४ लाख के लगभग आदमी हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा की रियासतें ।

इन रियासतों की आवादी साढ़े बारह लाख मनुष्यों के लग भग है और इन में से शान और चीन की पहाड़ियों की रियासतें सब से बड़ी हैं लाख चीन को बहुत जाती है। यहां के टट्टू बहुत प्रसिद्ध हैं ॥

स्वतंत्र रियासतें ।

नैपाल—यह एक लम्बा सा तङ्ग पहाड़ी खण्ड हिमालय पर्वत में कमाऊं से सिक्कम तक विस्तृत है। इस की लम्बाई अधिक से अधिक ५०० है। और चौड़ाई अधिक से अधिक डेढ़ सौ मील। और क्षेत्रफल चव्वन हज़ार के लगभग है। इस में चालीस लाख के लग भग मनुष्य बसते हैं। इस प्रान्त में जगत के अतीव ऊंचे पर्वत और अनेक नदियां हैं। जो अतीव फलदायक घाटियों में से होती हुई बहती हैं। यहां के निवासी प्रायः चावल खाते हैं। वनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नाना प्रकार की बहु मूल्य लकड़ी होती है। भेड़ों से भार वाही जीवों का काम लेते हैं ॥

यहां के असली निवासी मंगोलियन जाति के हैं। परन्तु विजयी जाति गोरखिये हैं। गोरखिये यद्यपि छोटे कद के और कुरूप होते हैं, तथापि बड़े परिश्रमी और साहसी होते हैं। इस राज्य की राजधानी खटमंडू है। जिसकी आबादी पचास हज़ार है इस में लकड़ी के अगणित मंदिर बने हुए हैं ॥

भूटान—यह रियासत हिमालय पर्वत में, सिक्म के पूर्व की ओर है इस की राजधानी पुनाक्खा एक स्वभाविक दुर्ग प्रतीत होता है। जहां के निवासी तातारी वंश के हैं प्रायः निवासियों का धर्म बुद्ध है ॥

अन्य देशीय राज्य।

फ्रांसीसियों के अधिकार में यह स्थान हैं। पांडीचरी और कारीकल कारो मंडल तट पर, माही मालाबार तट पर। नियाऊं तट पर गोदावरी के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िले में और चंद्र नगर हुगली नदी पर, इन सब का क्षेत्रफल दो सौ वर्ग मील से कम है। आबादी दो लाख तिरासी हज़ार है। पांडीचरी में फ्रांसीसी गवर्नर रहता है ॥

पुरतगेज़ों के अधिकार में गुआ और दामान बम्बईहाते के तट पर है, और डेऊ काठियावाड़ प्रायः द्वीप के तट पर है अर्थात् किसी समय में पुर्तगेज़ों के पूर्वी राज्य की राजधानी था। अब उजाड़ पड़ा है। पुर्तगेज़ों के समस्त इलाके की आबादी तीन लाख उनतीस हज़ार है॥

रेल।

भारत वर्ष के समस्त बड़े २ शहरों के बीच अब रेल जारी है। आना जाना और व्यापार इसी के द्वारा होता है। इस समय तीस हजार मील के लग भग रेल की सड़कें बनी हुई हैं। और सर्वदा नवीन लाईनें खुलती रहती हैं। समस्त देश पर इन सड़कों का मानो एक जालसा फैला हुआ है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेल की सड़कें दो प्रकार की हैं। बड़ी पटड़ी की सड़क जिसकी चौड़ाई साढ़े पांच फुट है। और छोटी पटड़ी की सड़क जिसकी चौड़ाई सवा तीन फुट है। बड़ी पटड़ी की प्रसिद्ध सड़कें यह हैं॥

(१) ईस्टइंडियन स्टेट रेलवे (East Indian State Railway) यह सड़क कलकत्ते से देहली तक पहुंचती है। और वहां से देहली अम्बाला कालका रेलवे के नाम से कालका तक जाती है इस की एक शाखा इलाहाबाद से जबलपुर को भी जाती है॥

(२) नार्थ-वैस्टरन रेलवे (North-Western State Railway) यह लाइन विस्तार के विचार से सब से बड़ी है। समस्त पंजाब, बिलोचिस्तान, और सिन्ध में फैली हुई है। पेशावर से देहली तक, लाहौर से बिलोचिस्तान तक चली जाती है। उस की छोटी २ शाखाएं बहुत हैं। इस लाइन की आय सब लाइनों से अधिक है॥

(३) बम्बई बड़ोदा और सेण्ट्रल इंडिया रेलवे (Bombay, Baroda and Central India Railway)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बम्बई से खम्बायत की खाड़ी के गिरद होती हुई उत्तर की ओर जाती है । और राजपूताना मालवा रेलवे से मिलकर बम्बई और आगरे को मिला देती है॥

(४) इंडियन मिडलैंड रेलवे (Indian Midland Railway) कानपुर से ईस्ट इंडियन रलव (East Indian Railway) से पृथक होकर झांसी और भूपाल को होती हुई ग्रेट इण्डियन पेनिनस्युलर रेलवे (Great Indian Peninsula Railway) के साथ आमिलती है। इसी प्रकार बम्बई और कानपुर को मिला देती है॥

(५) ग्रेट इंडियन पेनिनस्युलर रेलवे—इसकी एक शाखा बम्बई से कलकत्ते को और दूसरी बम्बई से मदरास को जाती है॥

(६) मदरास रेलवे—मदरास प्रान्त के दूसरे सिरे तक पहुंचती है। और इसकी तीन शाखायें रीचोर, बिङ्गलोर और नीलगिरी को जाती हैं॥

(७) साउथ इण्डियन रेलवे (South Indian Railway) मदरास को टिनेवेली से मिलाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसकी एक शाखा बन्दरगाह टूटीकोरन को जाती है ॥

(८) बंगाल नागपुर रेलवे—कलकत्ते को नागपुर और बम्बई से मिलाती है ॥

(९) ईस्ट कोस्ट रेलवे (East Coast Railway) कलकत्ते को मद्रास से मिलाती है ॥

(१०) ईस्टरन बंगाल रेलवे (Eastern Bengal Railway) कलकत्ते से ईशान कोण की ओर जाती है ॥

(११) अवध और रुहेल खण्ड रेलवे- संयुक्त प्रदेश के इलाके में उत्तर के जिलों को गंगा से मिलाती है ॥

(१२) सर्दन पञ्जाब रेलवे (Southern Panjab Railway) जो देहली को समासटा से मिलाती है ॥

छोटी पटड़ी की सड़कें ।

(१) बङ्गाल और नार्थवैस्टरन रेलवे (Bengal and North Western Railway) बंगाल के वायव्य कोण में अवध तक जाती है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) राजपूताना मालवा रेलवे–राजपूताने के मध्य से गुजरती है। और देहली आगरे के पश्चिम में बम्बई बड़ोदा रेलवे के साथ और पूर्व में ग्रेट पेनिनस्युलर रेलवे के साथ मिलाती है ॥

(३) सदर्न महैटा रेलवे (Southern Mahratta Railway) बम्बई प्रदेश दक्षिणी भाग में बनी है ॥

(४) आसाम बंगालरेलवे (AssamB engal Railway) जो बंगाल के ईशान कोण में है।

इनके अतिरिक्त अगणित अन्य सड़कें और शाखाएँ हैं जो देश के भिन्न २ भागों को मिलाती हैं और इसी प्रकार समस्त देश में रेलों का एक विचित्र जाल बिछाया हुआ है ॥

भारत के प्रसिद्ध बंदरगाह।

भारत के पश्चिमी तट को मालावार तट कहते हैं और पूर्वी को कोरोमण्डल तट। इस पूर्वी तट पर कोई उत्तम बंदर नहीं। पश्चिमी तट पर किराची

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बम्बई अतिउत्तम बंदर हैं गुआ जो पुर्तगेज़ों के आधीन है और कालीकट जो प्राचीन बंदर है इसी तट पर हैं। टूटीकोरन, मदरास और विजिगापटम पूर्वीतट पर है। इनके अतिरिक्त कलकत्ता जो भारत की राजधानी है। एक प्रसिद्ध बंदर है ब्रह्मा में रंगून और मौलमीन बड़े बांदिर पोतस्थिति स्थान हैं॥

150672

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar